जैसे हो, वैसे ही भले

सूझ बूझ आस पास की मुख्य पृष्ठ पर बोध कथाओं का संग्रह

प्रथम संस्करण : २००४

प्रतियाँ : १०००

प्रकाशक : सृष्टि इन्नोवेशन्स
पो. बो. नं. १५०५०, अहमदाबाद - ३८० ०१५
फोन : ०७९- २७९१ ३२ ९३, २७९१ २७ ९२
फेक्स :०७९- २६३० ७३ ४१

ई- मेल ः anilg@sristi.org
http://www.sristi.org

कीमत - ७५/-

सृष्टि परिवार
साधना गुप्ता, किरीट पटेल, शैलेष शुक्ल, जितेन्द्र सुथार, रिया सिंहा, मुरलीकृष्णा, विजय शेरीचंद, आस्ताद पस्ताकिया, ज्योति कपूर, सुमती सेम्पेमने, दिलीप कोरडीया, रमेश पटेल, हेमा पटेल, धवल व्यास, राजू पटेल, चिमन परमार, महेश परमार, प्रवीण रोहित, परषोत्तम पटेल, रमेश ताविયाड, रामजी डाभी, शंभु रंगपरा, आर. पी. एस. यादव, बाला मुदलियार, आर. भास्करन, उन्नीकृष्णन, पारुल भावसार, निशा एन्थोनी, काजल शाह, नीता चौधरी, देवसी देसाई, केतकी देसाई, दक्षा मकवाना, सुमित्रा पटेल, अनिल गुप्ता, योगेश श्रीवास्तव

संयोजन और अनुवाद : साधना गुप्ता

टंकण : दक्षा मकवाना, सुमित्रा पटेल

चित्राकन : डी.टी. पाडेकर

मुद्रण : बंसीधर ओफसेट, मीठाखली, अहमदाबाद- ९

सृष्टि इन्नोवेशन्स, अहमदाबाद

ISBN 81- 87160-03-9

जैसे हो, वैसे ही भले

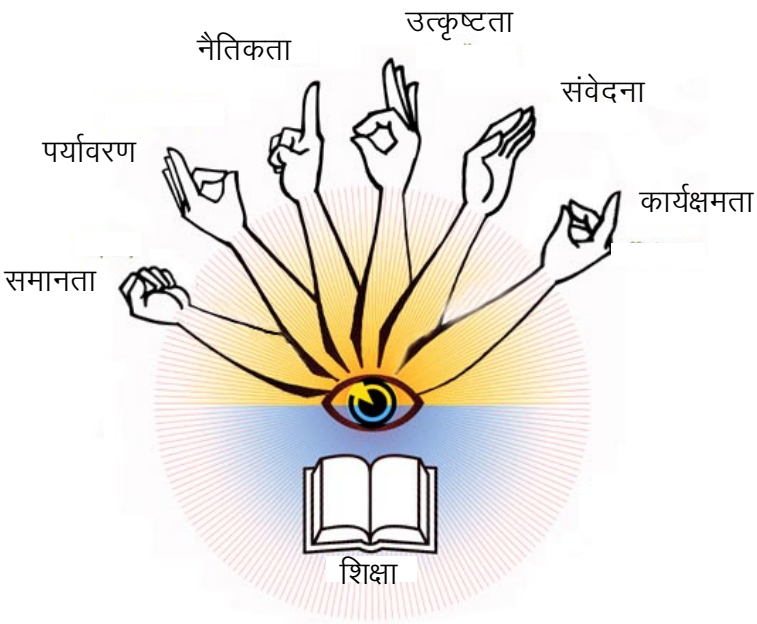

हनी बी नेटवर्क के मूल्य

सूझ बूझ की चुनी हुई बोध कथाओं का संग्रह

सृष्टि
अहमदाबाद
web: http://www.sristi.org

सूझ बूझ आसपास की नेटवर्क

हित्तलगिडा (कन्नड़)
डॉ. टी. एन. प्रकाश
कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय,
जी.के.वी.के, बैंगलोर -६५,कर्नाटक
email:hittalu@bgl.vsnl.net.in
prakashtnk@yahoo.com

नम वाली वेलेन्माई (तमिल)
पी. विवेकानन्दन
४५, टी.वी.एम.नगर,,
विरट्टिपट्टू - ६२५०१०
तमिलनाडु
numvali@sancharnet.in

आम अखा-पखा (उड़िया)
डॉ. बलराम साहू,
३-आर, बीपी ५/२,
बीपी कोलोनी युनिट-८
भुवनेश्वर - ७५१०१२ ओरीस्सा
balaram_sahu@hotmail.com

इनि कर्षकन संसारिकटे (मलयालम)
जेम्स टी. जे.
पीरमेड डेवलोपमेन्ट सोसायटी
पीरमेड, इडुक्की- ६८५५३१, केराला
pedes@md2.vsnl.net.in

हनी बी (अंग्रेजी)
सूझ बूझ आस पास की (हिन्दी)
प्रो. अनिल कुमार गुप्ता
लोकसरवाणी (गुजराती)
रमेश पटेल
भारतीय प्रबंध संस्थान, वस्त्रापुर, अहमदाबाद- १५
honeybee@sristi.org, loksarvani@sristi.org

प्रस्तावना

आज से १४ वर्ष पहले जब हनी बी नेटवर्क की शुरुआत हुई तब हमारा स्वप्न था कि हम एक ऐसे विश्व का सृजन करें जिसमें स्थानीय रचनात्मकता को पहचान पाने के लिये दर-दर न भटकना पड़े। हमारा उद्देश्य था कि बुनियादी नवसृजकों को गांव-गांव में ढूंढ़ना व उनकी सूझबूझ के आधार पर प्रयोग कर के उनके ज्ञान को समाज के कोने-कोने में पहुंचाना। प्रकृति व पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी ने हमें ऐसी सूझबूझ को ढूंढने के लिये प्रेरित किया जो प्रकृति प्रिय थी। नुकसानदायी रसायनों के उपयोग के बिना हानिकारक जंतु व रोगों को रोकने के उपाय, जमीन की उत्पादन क्षमता और प्राणी स्वास्थ्य के पोषण के लिए सक्षम तरीके, उर्जा बचानेवाले खेत उपयोगी साधनों का निर्माण करना, जमीन व जल संरक्षण के तरीके इत्यादि जैसे सूझबूझ से हरेभरे संशोधनों व नवसृजनों का संकलन व प्रसारण का कार्य हम करते हैं। इस के अलावा हम "सूझ बूझ आसपास की" नामक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित करते हैं। जिसके हर अंक में हम पाठकों के लिए एक मुख-पृष्ठ कहानी भी प्रस्तुत करते हैं। यह कहानी हमारी मान्यताओं के अलग-अलग पहलुओं को भी प्रस्तुत करती है। निरंतरता को बनाये रखने की भावना समाज में आज भी मजबूत व प्रबल है और हमारी सोच व संवेदनशीलता का आधार है। तो फिर सवाल यह उठता है कि आज हमारे संसाधन क्यू ज्यादा से ज्यादा अनिरंतरता से उपयोग किये जाते हैं कि मानो 'कल' अब कभी होगा ही नहीं? ऐसा लगता है कि हमारे रोजमर्रा के निर्णयों में व्याप्त नैतिकता व हमें प्रकृति के साथ जोड़े रखनेवाली भावना के बीच की कड़ी निर्बल हो गई है या टूट गई है। प्रकृति के प्रति हमारी जवाबदेही इस बात पर निर्भर करती है कि हम कैसे बिल्कुल अनजान लोगों अथवा जीवों को देखते हैं। बिलकुल अनजान जीवों का मतलब है ऐसे जीव या जन जिनको न हम जानते हैं और न हीं जान सकते हैं। वास्तव में ऐसे बिलकुल अनजान लोग हैं। कौन? ये है ऐसी चिड़ियां, चीटीं तथा जन्य प्राणी जो हमसे सम्बन्धित तो हैं लेकिन हमें नहीं मालूम कि वे हमारे बारे में तथा हमारे उनके प्रति व्यवहार के बारे में क्या सोचते हैं? ऐसे भावी पीढ़ी जिसका अभी जन्म ही नहीं हुआ है, उनके विचारों के बारे में हम कैसे जान सकते हैं?

लेकिन ऐसे जन या जीवों के प्रति, जिन्हें हम नहीं जानते हैं और न जान सकते हैं, हमारी जिम्मेदारी हम कैसे पूरी करेंगें? जब हम प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह नहीं कर पाते तो हम कहीं न कहीं अपने प्रति भी अन्याय कर बैठते हैं। प्रश्न उठता है कि हम युवा विद्यार्थियों, शोधार्थी, नीति निर्माताओं और राजनैतिक नेताओं के मन में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का भाव कैसे पैदा करें।

बचपन से ही हमें कहानियां अच्छी लगती हैं। इसलिये नहीं कि केवल वो हमको कल्पना की दुनिया में पहुंचा देती हैं बल्कि इसलिये भी क्योंकि वो हमें धर्म निरपेक्षता और नैतिक पवित्रता के बीच, यर्थाथ व कल्पना के बीच और मौलिक व आत्मिक भावनाओं के बीच पहुंचा देती है।

कहानियां हमारे मन में द्वन्द पैदा करती हैं और कई बार अजीबोगरीब प्रश्न भी उठाती हैं उदाहरण के लिये हमारी एक मुख-पृष्ठ की कहानी में एक महिला, खेत में कुछ गिरे हुये दानों को उठाकर घर आ रही है। अकाल का समय है, फसल खराब हो चुकी है और चारों तरफ भुखमरी फैली है। रास्ते में उसे एक तोता मिलता है जो उसकी तरफ घूर-घूर कर देख रहा था। महिलाओं को किसी का घूरना कहां अच्छा लगता है। महिला उस तोते के पास जाती है और उससे पूछती है तुम मुझे क्यों घूर रहे हो? महिला ने एक लोकिट पहन रखा था जिसके हरे रंग का अगेट पत्थर

जड़ा हुआ था। तोता बोला, "ओह मैं समझा तुम्हारे हार में यह अनाज का दाना है मगर यह तो एक पत्थर है" महिला बोली, "इसका मतलब तुम भूखे हो"। महिला ने खेत में जो भी दाने पड़े थे उन्हें इकट्ठा करके ले आयी थी। महिला ने उसे घर आने को कहा ताकि वह भी खा सके।

लेकिन तोता उड़ गया। कनार्टक में हमने यह कहानी सुनी एक गीत के रुप में। कवि ने यह नहीं बताया कि तोता क्यों उड़ गया लेकिन हर पीढ़ी को यह प्रश्न तो उठाना पड़ेगा कि तोता क्यों उड़ा।

इस संदर्भ में एक और कहानी का उल्लेख शायद उपयुक्त होगा। यह कहानी हमने अमृतभाई से हाल ही में सम्पन्न एक शोधयात्रा में सुनी थी। अमृतभाई ने एक बैलगाड़ी के स्वरुप में आमूल परिवर्तन किया है ताकि देसी खाद को सीधा क्यारियों में डाला जा सके। उन्होंने ही पानी खींचने की घिर्री में भी परिवर्तन किया है, टिटोडी नाम की एक चिड़िया प्रायः जमीन पर अंडे देती है। कितनी ऊँचांई पर वो अंडे देती है, इससे किसान अंदाजा लगाते हैं कि इस वर्ष बारिश कितनी होगी।

यदि ज्यादा बारिश की उम्मीद होती है तो, टिटोडी अंडे ऊँचाई पर देती है। एक बार एक टिटोडी के जोड़े ने समुद्र के किनारे अंडे दिये यह सोच कर कि वह जगह सुरक्षित होगी। लेकिन समुन्द्र की लहरें यकायक टिटोडी के अंडो को बहा कर ले गई। टिटोडी बाकी जानवरों पक्षियों के पास गई और उसने अपने अंडों की चोरी के बारे में शिकायत की। सभी पक्षियों की पंचायत बुलाई गई और यह निर्णय किया कि सब मिल कर समुन्द्र में पत्थर फेकेंगे और समुन्द्र को टिटोडी के अंडे वापिस करने के लिए बाध्य करेंगे। सभी जानवरों ने कंकर उठाकर समुन्द्र की ओर हमला करने की नियत से बढ़ना शुरु किया। समुन्द्र को डर लगा और उसने टिटोडी के अंडे वापिस कर दिये। जरा अंदाजा लगाइये कि क्या हम प्रकृति के हमले का सामना कर पायेगें। यदि विभिन्न जीवों ने हमारे द्वारा पहुँचाने वाले नुकसान का बदला लेने का निर्णय लिया तो?

हनी बी या मधु मक्खी की उपमा हमने अपने लिये एक नूतन और अनूठा दर्शन अपनाने के लिये चुना। जिस प्रकार मधु मक्खी एक फूल को दूसरे फूल से परागीकरण के माध्यम से जोड़ती है, क्या हमें लोगों के ज्ञान, उनकी खोज व अन्वेषण को दूसरे लोगों तक नहीं पहुँचाना चाहिये। इस तरह के गठजोड़ को बनाने के लिये स्थानीय भाषा में सुगम लहजे में लोगों का ज्ञान व उसमें हुए संशोधन को उन तक पहुँचाना जरुरी है। साथ ही जिस प्रकार फूलों को शिकायत नहीं होती यदि उनका पराग लिया जाये, तो क्या हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि ज्ञान सम्पन्न लोगों का उनकी जानकारी लेने पर कोई एतराज न हो? उनको गुमनाम न रखा जाये, उनकी पहचान बननी चाहिये। यदि लोगों के ज्ञान में संशोधन करके या वैसे ही कोई भी नया उत्पाद पैदा होता है, तो उससे होने वाले फायदे का न्यायोचित हिस्सा ज्ञानप्रद लोगों को मिलना चाहिये।

इस भावना के साथ रचनात्मक लोगों को एक दूसरे से जोड़ने के लिये यह एक प्रयास है, हनी बी नेटवर्क या गठजोड़ का, आप भी इससे जुड़ये और इस दर्शन को आगे बढ़ाइये। आप हमे लिखेंगे?

(अनिल के. गुप्ता)

अनुक्रमणिका

१. प्रकृति के संगः जीती धनवर ने सफल खेती की जंग १
२. हम हैं प्रभात की पुकार, हम हैं सूर्य के पहरेदार ३
३. जमीन के बदले जीवन की बाजी- आरुणी ६
४. सतत विकासः सूक्ष्म और समग्र दृष्टि का संयोजन ८
५. कैसी है अकाल की वेदना : पशु, मानव और प्रकृति सबको है जीवित रखना १०
६. पुरुषार्थ का आयोजन : निरन्तर विकास का नया स्वरूप १२
७. चींटी ने क्यों काटा : कौतुक कुदरत का १४
८. निष्फल होने का निर्णय : आखिर क्यों? १६
९. छोटा आकार : बड़ा विचार १८
१०. अकाल में बीज की चिंता : मूक निगाहे, अनिश्चित दिशायें २०
११ आपत्ति की सूचना हम कब सीखेंगे २२
१२. जैविक विविधता और स्थानीय ज्ञान : भूलती हुई परम्परायें २४
१३. ज्ञान बड़ा या बुद्धि २६
१४. रसहीन धरा हुई, दयाहीन राजा हुआ २८
१५. जैसे हो, वैसे ही भले - टूटे घड़े की कहानी ३०
१६. गेहूं के दाने में छिपा विश्व! ३२
१७. तोता आखिर क्यों उड़ा? ३४
१८. एक बेल को भी है, जीने का अधिकार ३६
१९. चावल ही क्यों, गेहूं क्यों नहीं? ३८
२०. असली मूर्तिकार कौन ? ४०
२१. क्या गाय को न्याय मिला? ४२
२२. सुन्दरता क्या है? ४४
२३. नर या मादा? ४६
२४. घंटी किसने बजाई? ४८
२५. आंवला किसने खाया? ५०
२६. ढाई किलो दाने क्यों? ५२
२७. जाल क्यों टूटा? ५४
२८. ऐसी क्या कसौटी थी? ५६
२९. यह कैसा सौदा? ५८

यहां क्या

?

क्या आप यह पृष्ठ हमारे लिए अपनी तरफ से भरना चाहते है? आप कोई भी सुनी हुई या पढ़ी हुई एक सुन्दर बोध कथा लिखकर भेजें। बोध कथा की इस श्रृंखला में अपनी एक कथा को शामिल करना चाहेगें, ऐसी हमारी आशा है। चुनी हुई उत्तम कथा हम प्रकाशित करेंगे और विजेताओं को ५००/- रु. का इनाम तथा एक साल के लिये सूझ बूझ के अंक मुफ्त मिलेंगे।

परन्तु हां... कथा लिखकर भेजते वक्त उसका स्रोत तथा संदर्भ लिखना न भूले ....!

प्रकृति के संग: जीती धनवर ने सफल खेती की जंग

एक जंगल में धनवर शिकारी, उसका परिवार और पालतू कौवा एक साथ रहते थे। वह शिकार के साथ-साथ खेती करके अपने परिवार का पालन-पोषण करता था।

रोज की दिनचर्या शुरु होते ही कौवा भोजन की तलाश में दूर-दूर तक जाता था। खा-पीकर वह जिस नीम के पेड़ पर बैठता था, उसके सामने ही सृष्टि के सर्जक ब्रह्मा का दरबार लगता था। इस दरबार में होने वाली बातों को कौवा ध्यान से सुनता था। शाम को घर वापिस आने के बाद वह ब्रह्मा के दरबार की हर बात अपने मालिक को बताता था, जिसे वह रस पूर्वक सुनता था। एक दिन ब्रह्मा अपने मन्त्रियों को वर्षा के बारे में बता रहे थे कि इस वर्ष केवल पर्वतीय विस्तारों में ही वर्षा होगी बाकी सभी जगहों पर अकाल पड़ेगा। यह बात कौवे को अत्यन्त महत्वपूर्ण लगी उसने धनवर को सलाह दी कि इस वर्ष तुम

पर्वतीय विस्तार में बुवाई करना। धनवर ने कौवे की बात मान कर पर्वतीय विस्तार में फसल बोई। पर्वतों में वर्षा होने के कारण इस वर्ष उनका खेत हरा भरा रहा जबकि दूसरे किसानों की फसल सूख गयी।

इस दौरान ब्रह्मा को खबर मिली कि, पर्वतीय विस्तार के एक खेत में बहुत अच्छी फसल हुई है, अगले वर्ष कौवा आतुरता पूर्वक राह देखता रहा कि आने वाला वक्त कैसा होगा? ब्रह्मा के दरबार में फिर घोषणा हुई। इस वर्ष सूखा पड़ेगा और उस समय जन्तु तथा कीट फसल का नाश करेगें। इस बात को कौवे ने ध्यान से सुनी उसने मालिक से कहा कि इस वर्ष कीट खेत पर हमला करेंगे इसलिये मैना जैसे परभक्षियों को बुलाओ। धनवर ने परभक्षियों की मदद से फसल की रक्षा की। पहले की तरह ब्रह्मा को खबर मिली कि धनवर के खेत में कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। यह जानकर ब्रह्मा आश्चर्य में पड़ गये कि एक व्यक्ति के यहां फसल क्षतिरहित है।

उसके अगले वर्ष ब्रह्माजी ने घोषणा करते हुए कहा कि इस वर्ष चूहों के कारण सम्पूर्ण फसल नष्ट होगी। उसके अनुसार कौवे ने सलाह दी कि ब्रह्मा जी ने खेतों को नष्ट करने के लिये चूहे भेजे हैं अतः विशिष्ट बिल्लियों को तैयार रखना जो चूहें खा जायेंगी और फसल की रक्षा हो सकेगी। धनवर ने ऐसा ही किया और उसकी फसल बच गयी। ब्रह्मा जी चकित हो गये। फिर उन्होंने घोषित किया जो किसान फसलों में से उचित समय पर दाने नहीं निकालेंगे वे अपनी पूरी फसल गवाएगें। कौवे के कहने पर धनवर ने समय रहते अनाज में से दाने निकाल कर अपनी फसल को बचा लिया।

इस प्रकार प्राकृतिक उपायों की जानकारी की वजह से धनवर प्रतिवर्ष अपनी फसलों की रक्षा कर सका। जो लोग प्रकृति के संसर्ग में रहकर खेती की मुश्किलों का हल ढूंढ़ते हैं उनमें प्रकृति की भाषा समझने की योग्यता अपने आप आ जाती है। प्रकृति की वाणी समझकर, प्रकृति की रक्षा करते हुये कार्य करने से प्रकृति स्वयं ही समस्या हल करने में सहायता करती है।

हम हैं प्रभात की पुकार, हम हैं सूर्य के पहरे दार

सर्जनहार ने सृष्टि की रचना की। यह तब की बात है जब रोज सुबह सूरज उगता, दोपहर तपती और शाम ढलती थी।

रात होने पर सम्पूर्ण सृष्टि में शीतल अंधकार छा जाता परन्तु पृथ्वी पर रहने वाले जीवों को यह तपता सूर्य असहनीय लगता था। एक दिन पृथ्वी पर समस्त जीवों ने एकजुट होकर सूर्यदेव से प्रार्थना की। आप पृथ्वी पर आना बंद करेगें तो हमारी अनेकों समस्याएँ हल हो जायेंगी और पृथ्वी स्वर्ग बन जायेगी। ऐसा सुनकर सूर्यदेव रुठ गये। दूसरे दिन से ही सूर्य ने पृथ्वी पर आना बंद कर दिया।

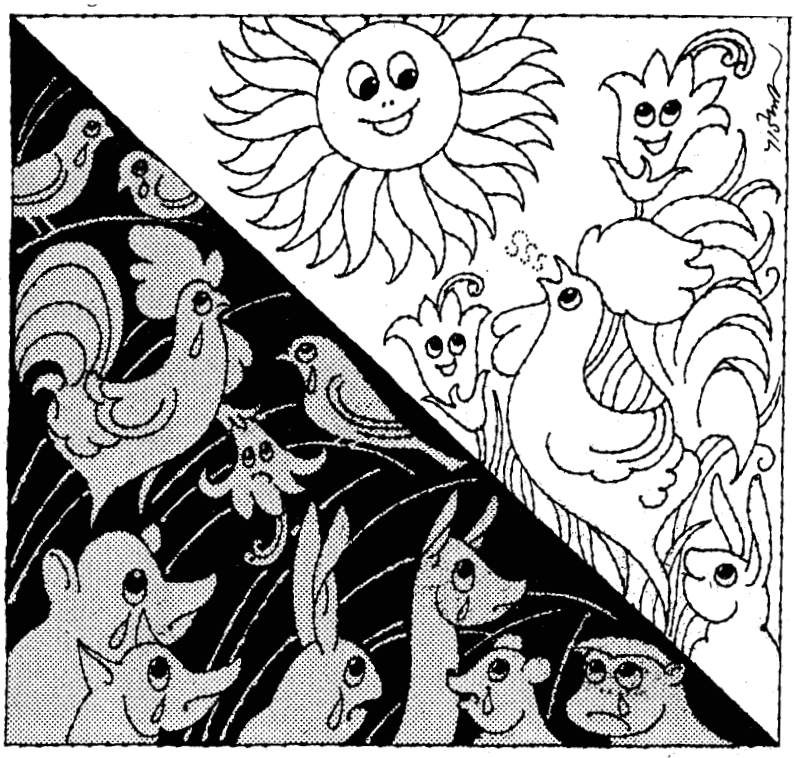

पृथ्वी पर समस्त जीव खुशी से नाच उठे। अब मजा ही मजा है। बहुत से लोग तो खूब सोये और प्रसन्न हुए, लेकिन दो तीन दिन के बाद अंधेरे से सब जीव परेशान हो गये। उसके बाद तो, लोग अत्यंत ठन्डी और अन्न की कमी से एक - एक करके मरने लगे। अब उन्हें सूर्य भगवान की महत्ता समझ में आयी। सभी जीवों ने फटाफट इकट्ठा होकर एक प्रतिनिधि मंड़ल बनाया और सूर्यदेव को प्रसन्न करने का प्रयास किया लेकिन लाखों आग्रह करने पर भी कठोर मन के सूर्यदेव प्रसन्न नहीं हुए।

पृथ्वी पर निराशा छा गयी। प्राणी, पक्षी, जलचर और मनुष्य सभी चिन्ता में डूब गये विचार करने लगे कि, अब क्या होगा? तभी मुर्गा आगे आया और उसने चिंतित प्रजा से निवेदन किया मित्रो, यदि आप लोगो को आपत्ति न हो तो मैं सूर्यदेव को मनाने जाऊ? सब लोग उसकी इस बात पर खूब हंसे पर बाद में विचार किया कि, "जाता है तो जाने दो, लग गया तो तीर, नहीं तो तुक्का। इस बात पर सब सहमत हुए।"

मुर्गा सूर्यदेव के घर गया और नमन करके बोला, "हे तेजस्वी देव, आप तो सृष्टि के सर्जक द्वारा निर्मित अद्वितीय वरदान हो, शक्ति का स्त्रोत हो, इस दुनिया में आप का कोई विकल्प नहीं हम सभी पृथ्वी वासी अज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि हम अपना हित-अहित परखने में अक्षम हैं। ऐसा होने पर भी हम अज्ञानियों को अंधकार में रखकर कष्ट देना आप जैसे परमार्थी देव को शोभा नहीं देता। मै समग्र सृष्टि वासियों की ओर से क्षमा मांगता हूं और पृथ्वी पर वापिस आने को विनती करता हूं।" मुर्गे ने आग्रह करते हुए फिर कहा, "हे देव, मेरे नासमझ मित्रों की अज्ञानताभरी वाणी के कारण आपने जो हठ लिया है उसके कारण मेरे जैसे निम्न जीवो के अनेक समुदाय नष्ट हो जायेंगे।"

यह सुनकर सूर्यदेव थोड़ा नरम हुये। यह देखकर मुर्गों में थोड़ी हिम्मत आयी और वह बोला, हमारे मूर्ख मित्रों की तरफ से क्षमा चाहता हूं, सृष्टि पर अब आपकी कभी भी निन्दा नहीं होगी इतना ही नहीं मैं प्रतिदिन प्रातः काल एवं संध्याकाल में आपके आगमन और विदाई की घोषणा करके आप का महत्व समग्र सृष्टि को समझाऊंगा। प्रतिदिन ओस की बूदें जमीन पर बिछकर आपकी किरणों को नमन करेंगी और सुगंधित फूल खिलकर आपका स्वागत करेंगे।

सूर्यदेव के चहरे पर मुस्कान देखकर मुर्गा प्रसन्नचित्त पृथ्वी पर आया और जोर से बांग दी कुकडुं-कूं तुरन्त ही तेज दौड़ते घोड़ों पर सूर्यदेव की सवारी आयी। एक लम्बे कालक्रम के बाद जीव सृष्टि ने प्रातःकाल की पहली किरण देखी और सब खुशी से झूम उठे। तब से मुर्गा सुबह शाम सूर्य के आगमन तथा विदाई की घोषणा करने का नियम पालन कर रहा है।

मानवमात्र का यह स्वभाव है कि, बिना कष्ट उठाए, मिली वस्तु का मूल्य हमारे मन में नहीं के बराबर होता है। इसलिए हम उसका दुरुपयोग करते हैं, जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है तब से आज तक पानी का स्तर नीचा ही हुआ है लेकिन पिछले १८ साल में इसका प्रमाण हद से ज्यादा ही नीचा हुआ, इतना ही नहीं जमीन में संग्रहीत अमूल्य पानी का शोषण करने के लिये आज कल सरकार सबसिड़ी यानि आर्थिक छूट देती है।

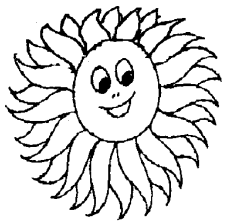

बहुत कम समय में मानव सर्जित मरुभूमि के लिये हमारा सम्मान होगा! हमारी अमूल्य कुदरती सम्पत्ति की धरोहर का मूल्य बताने वाली यह कहानी नागालैन्ड की लोक कथाओं से ली गई है।

जमीन के बदले जीवन की बाजी- आरुणी

ऋषि परम्परा के अनुसार आरुणी ऋषि का बेटा आरुणी धौम्य ऋषि के आश्रम में रहकर विद्या अभ्यास के साथ-साथ खेती और पशुपालन की देखरेख करने की जिम्मेदारी संभालता था। आश्रम की जमीन ढालवाली होने के कारण वर्षा के समय जमीन की ऊपरी सतह भी धुलकर बह जाती थी। इसको रोकने के लिये आश्रम के सभी शिष्यों ने मिलकर मेढ़ बनाई।

वर्षा के दिनों में एक दिन मूसलधार बारिश हुई। अचानक ही गुरु जी को शिष्यों द्वारा बनायी गयी मेढ़ याद आयी। तुरन्त गुरु जी ने कहा,

आरुणी खेत में मेढ़ की तलाश करो कहीं कट या टूट तो नहीं गयी है? आरुणी ने खेत में जाकर देखा तो मेढ़ टूट गयी थी तथा पानी जोरों से बह रहा था। आरुणी बारिश की परवाह किये बिना गीली मिट्टी से मेढ़ बनाने लगा परन्तु पानी के वेग के कारण मिट्टी भी धुल जाती थी। अन्त में आरुणी ने सोचा मैं वहीं लेट जाता हूं तो पानी के साथ मिट्टी उसके शरीर से चिपक कर रुक गयी थोड़ी देर बाद बारिश भी बन्द हो गयी मगर तीव्र ठन्डी के कारण जकड़ा हुआ आरुणी उठ नहीं सका। आरुणी जब शाम तक आश्रम नहीं लौटा तो चिन्तातुर धौम्य ऋषि और शिष्य उसे ढूंढते-ढूंढते हुए खेत में पहुंचे। धौम्य ऋषि ने खेत में जोर से आवाज लगायी। आरुणी-आरुणी तुम कहां हो? मैं यहां हूं गुरुदेव बहुत धीमी तथा कराहती हुई आवाज में आरुणी ने कहा।

गुरुदेव आवाज की दिशा में आगे बढ़े वहां जाकर देखा तो टूटे हुये मेढ़ की जगह पर आरुणी जकड़ा हुआ बेहोश हालत में पड़ा है। धौम्य ऋषि ने आरुणी को बिठाकर उसे गले लगाया और कहा, शाबाश! बेटे आज तुमने अपनी जिन्दगी की परवाह किये बिना जमीन का क्षरण या कटाव रोका है।

आज जमीन और जंगल का निरन्तर दोहन सर्वत्र हो रहा है तब उसे रोकने के लिये हममें से कितने लोग चिंतित हैं? हमारी प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण के लिये जगह-जगह पर आरुणी की जरुरत है। तब ही तो प्रकृति के पास से सब कुछ लेने के स्वार्थ के साथ जीने वाले मानव का अस्तित्व सुरक्षित रह पायेगा। हमारा स्वार्थ ही हमें किनारे की तरफ ले जा रहा है।

सतत् विकास: सूक्ष्म और समग्र दृष्टि का संयोजन

प्राचीन समय में गुरु द्रोणाचार्य शस्त्र विद्या में कुशल थे। सुदूर वन में उनकी आश्रमशाला थी। जिसमें वे राजकुमारों को शिक्षा के साथ-साथ जीवन में स्वयं पर आश्रित होने की शिक्षा देते थे। गुरु द्रोणाचार्य के पास ही पांडवों और कौरवों ने शस्त्रविद्या सीखी। उनमें से पाचों पांडव उनके प्रिय विद्यार्थी थे।

एक दिन गुरु जी को उनकी परीक्षा लेने की इच्छा हुई। उन्होंने मैदान में दूर एक पेड़ के ऊपर सफेद रंग का एक बनावटी पक्षी रखा और लाल रंग के पत्थर से उसकी आंख बनायी। आचार्य ने राजकुमारों से

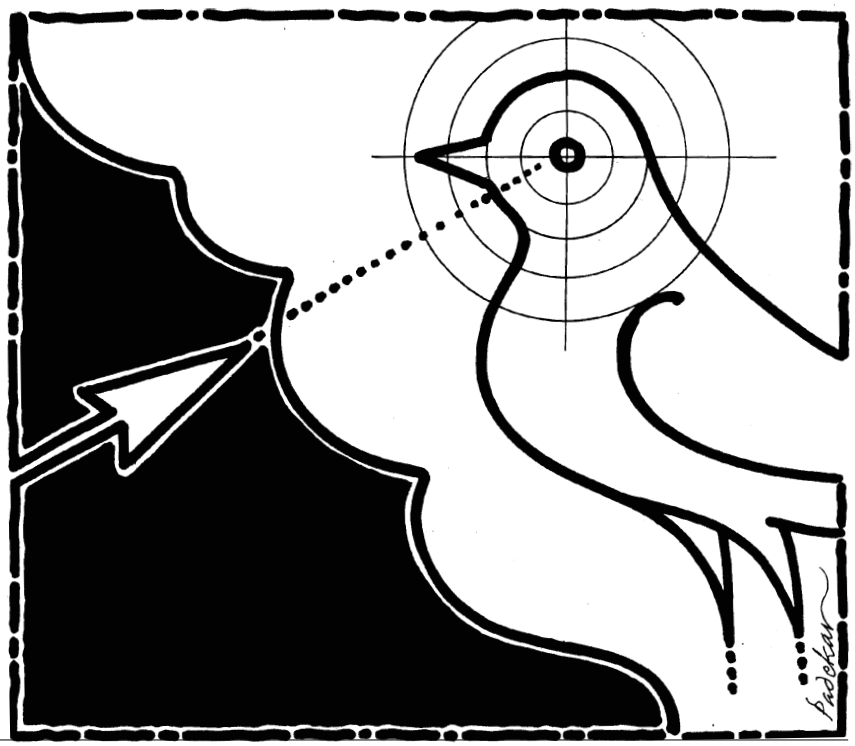

जैसे हो, वैसे ही भले

कहा कि दूर के उस वृक्ष पर मैंने जो पक्षी रखा है उसकी आंख तुम लोगों को बींधनी है, फिर उन्होंने एक-एक करके सभी शिष्यों को बुलाया और पूछा, तुम्हें क्या दिखता है। युधिष्ठिर ने कहाः मुझे समस्त आकाश दिखायी देता है और पेड़, पेड़ के पत्ते दिखायी देते हैं, पेड़ पर पक्षी भी दिखायी देता है उसके बाद दुर्योधन की बारी आयी दुर्योधन ने कहाः मुझे मेरे भाई दिखायी देते हैं आप दिखायी देते हो, नीला आकाश और पेड़ दिखायी देते है, पक्षी का शरीर दिखायी देता है। भीम ने कहाः मुझे आकाश में विशाल बादल दिखायी देता है, गुफा दिखायी देती है, गुफा के अन्दर बिला दिखायी देता हैं। द्रोणाचार्य निराश हो गये, उन्होंने अनेक कुमारों से वही सवाल पूछा लेकिन किसी के उत्तर से वे संतुष्ट नहीं हुए। अन्त में उन्होंने अर्जुन से पूछा- अर्जुन ने कहा, गुरुदेव मुझे केवल पक्षी की आँख दिखायी देती है। तो पुत्र, उसे ही लक्ष्य बनाओ। गुरुदेव के इतना कहते ही अर्जुन का बाण सन्न.... करता हुआ पक्षी की आंखों के आरपार हो गया।

प्रसन्नता से द्रोणाचार्य बोल उठे, शाबाश, तुम ही मेरे सच्चे शिष्य हो। भविष्य में अर्जुन को बाण विद्या में श्रेष्ठतम पद हासिल हुआ।

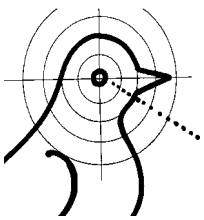

केवल पक्षी की आंख ही देखना यह अति विशिष्ट और सूक्ष्म दृष्टि है समस्त विश्व को देखना और पक्षी की आंख को देखना दोनों के हेतु अलग-अलग हैं। फिर भी दोनों का महत्व है दोनों में से किसी एक को नजर अन्दाज करने से सृष्टि मंडल के अस्तित्व को हानि हो सकती है किसी भी स्थिति को गहनता से समझना हो तो उसे छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करके देखना जरुरी है जबकि दूसरी ओर उनमें आन्तरिक संबंधों को समझना भी उतना ही जरुरी है। समस्त सृष्टि को टिकाये रखने के लिये अर्जुन जैसी अति सूक्ष्म तथा युधिष्ठिर जैसी विश्वव्यापि दृष्टि का बोध हम सब में विकसित करने की जरुरत है।

कैसी है अकाल की वेदना : पशु, मानव और प्रकृति सबको है जीवित रखना।

गुजरात के सुरपुरा गांव के जीवाभा नामक चरण जाति का एक किसान आकाश की ओर नजरें बिछाएं बैठा था। एक महीना पहले अचानक आंधी व बरसात साथ में आई और धरती तृप्त हुई। किसानों के दिल को थोड़ा चैन मिला । दो सालों के दुष्काल के बाद किसानों को आशा बंध गयी।

जीवाभा ने अपनी पगड़ी के छोर में बांधे दाने भी खेत में बिखेर दिये। कुछ दिन में खेत ने हरी चुनरी ओढ़ ली पर एक दिन बारिश दिखी। उसके बाद दिखी ही नहीं। उगे हुये पौधों के पत्ते मुरझाने शुरु हो गये। पिछले साल जो दुष्काल हुआ था तब किसानों ने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर दिन गुजारे थे, ऊपर से इस साल भी बिना बारिश

के दिन देखकर अन्दर ही अन्दर किसान दुःखी होते थे, कहीं घास भी नहीं दिख रही थी। एक तो कम बारिश और मवेशियों का गांव होने की वजह से थोडी बहुत घास सब पशुओं ने खा ली थी। अपने पेट पर पट्टी बांध कर किसान बहुत दूर से घास उठा कर लेकर आ रहे थे। जीवाभा के दोनों बैल रंभा-रंभा कर उससे मिन्नत कर रहे कि, अब रहा नहीं जाता, अब तो कुछ खाने के लिये दो। उनकी इस वेदना से जीवाभा की आत्मा तड़प उठी, हे प्रभु, ऐसे मूक जानवर के साथ भी इतनी यातना? बहुत दूर से सिर पर लायी घास की गठरी भी खत्म हो गयी थी। मुझे लगता था इतनी घास जब तक तुम खाओगे तो तब तक बारिश आ ही जायेगी लेकिन नहीं आयी। छोटे- मोटे किसान के हाथ में कितने पैसे होगें? सब बचे-खुचे पैसे खत्म हो चुके हैं। मैं तो कुछ न कुछ कर लूगा मगर तुम लोगों का क्या करें। किसान बैल के सामने अपनी उलझन बता रहा था दोनों बैलों की बबूल के पेड़ से बंधी रस्सी खोल दी। बैलों को उसने बाजरे के खेत में छोड़ दिया। इसके एक-एक पौधे को हमने जान से ज्यादा संभाल कर रखा था। खा लो मेरे बच्चों, हमारा तो जो होना होगा, सो होगा। भूख के मारे बैल बाजरे के खेत पर टूट पड़े। यह देखकर जीवाभा को तृप्ति हो रही थी, इस तरह सूखे पेड़ के नीचे जाकर वह बैठ गया। सामने से उसकी पत्नी सिर पर खाना लेकर आ रही थी। उसने आवाज लगायी देखो-देखो बैल छूट गये लगते हैं उनको बांधों नहीं तो खेत में कुछ बाकी नहीं रहेगा। ऐसा बोलते ही वह बैल को बांधने के लिये दौड़ी यह देखकर जीवाभा भी दौड़ा और बोला कुछ मत करना बैल दो दिन से भूखे हैं, मैंने बहुत सोच कर उन्हें खेत में खुला छोड़ा है, रस्से बांधना मत। कुदरत के भीषण अकाल के वक्त यह विरल दृश्य देखकर सूर्य दादा हंस पड़े। जीवात्मा के मन में क्या मंथन हुआ होगा?

हमारे हिसाब से फसल पकाने में बैल का हिस्सा बहुत बड़ा है। बारिश नहीं हो तो फसल बिलकुल न हो, तो इसके बदले में बैल की भूख मिटे इसमें बुरा क्या है? कुदरत रुठी है तो फसल भी नहीं होगी इससे अच्छा यह ही है कि जानवर खा ले? अगले साल फिर से खेती होगी मगर बैल होंगे तो फिर से कमा लेंगे। हमें जिन्दा रखने वाले जानवर ही अकाल में मर जाये तो हम किसके सहारे जीवन निर्वाह करेंगे। जानवर हमारा इतना काम करते हैं तो क्या उन्हें जिन्दा रहने का अधिकार नहीं है? क्या उनको जिन्दा रखने का हमारा फर्ज नहीं बनता?

पुरुषार्थ का आयोजन : निरन्तर विकास का नया स्वरूप

एक आदिवासी जाति तालाब के किनारे रह कर शिकार करके जीवन चलाती थी। इस तालाब के किनारे रोज शाम को जंगली प्राणी पानी पीने आते थे। पशु पानी पीने आयें तब उनका शिकार करना आदिवासी लोगों के लिये शिकार करने का आसान तरीका था परन्तु हर रोज इस तरह शिकार करेंगे तो पशु को अपनी जान जोखिम का ख्याल आ जायेगा और पशु का पानी पीने के लिये आना बन्द हो जायें या वह दूसरी जगह स्थान्तर कर जाये, यह सम्भावना थी। यदि ऐसा हो जाये तो आदिवासी लोगों को शिकार करने के लिये बहुत-बहुत दूर

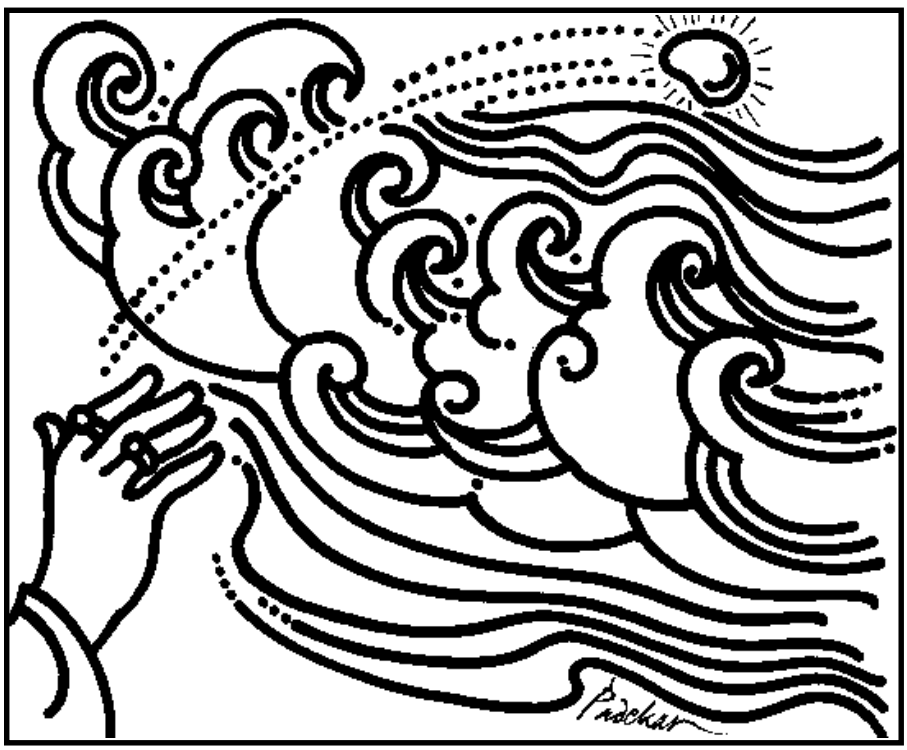

जाना पड़ सकता है। इस कारण खुद का स्थान बदलना पड़े ऐसी सम्भावना भी थी। आदिवासी लोगों ने इस समस्या का समाधान कैसे ढूढ़ा ? पशुओं को अपने जान के खतरे का ख्याल नहीं आये और ज्यादा शिकार के कारण उनका सर्वनाश भी न हो। एक विशेष युक्ति उन्होंने अपनायी। आदिवासियों के प्रमुख नेता ने निश्चित दिन, निश्चित दिशा में शिकार करने जाने का नियम बनाया। आदिवासी लोग पत्थर बंधी हुई एक डोरी को गोल-गोल घुमा कर छोड़े देते थे। जिस दिशा में पत्थर गिरता था उस दिशा में शिकार करने को वे जाते थे। भले ही वह दिशा पशु के आने की क्यों न हो।

इस नियम का सार यह है कि जिस दिन पत्थर तालाब की दिशा में पड़े, उस दिन पूरा शिकार करने को मिलता बाकी दिन कभी शिकार न भी मिलता। इस नियम के अनुसार कभी उन्हें पूरा शिकार करने का मौका मिलता था तो कभी बिलकुल शिकार नहीं करने का। पशु हमेशा तालाब में पानी पीने को आते हैं लेकिन यह ज्ञान आदिवासियों लोगों को था इस कारण उन्होंने यह नियम बनाया तो खुराक की अनिश्चितता पैदा हुई लेकिन नियम बताने के कारण पशुओं को मृत्यु का ख्याल भी नहीं रहा। मर्म है कि निश्चित ज्ञान (कब पशु पानी पीने आते है) को अनिश्चित अवस्था में बदल कर (कब, पत्थर किस दिशा में गिरता है) पशुओं को पानी पीने का स्थान बदलने की जरुरत नहीं पड़ती और ना ही आदिवासियों को दूरगामी अनिश्चितता का सामना करना पड़ता। जिस दिन उन्हें शिकार नहीं मिलता उस दिन वे भूख बांट लेते थे।

जोखिम की समस्या का अनिश्चिय में परिवर्तन कैसे किया जाये यह इस कहानी में बताया है। सोने अन्डे देने वाली मुर्गी को एक ही दिन में ज्यादे अन्डे लेने के लालच में मार डालने की बजाय स्त्रोत का आयोजनबद्ध प्रयोग कैसे किया जाये वह इस कहानी से सीखने को मिलता है। जियो तथा जीने दो सिद्धान्त का जीवन में चरितार्थ करने की बात से निरन्तर विकास के नये स्वरूप की झांकी इसमें है।

चींटी ने क्यों काटा : कौतुक कुदरत का

एक राजा के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी। एक दिन सब नदी पर मछली पकड़ने गये। हरेक राजकुमार ने एक-एक मछली पकड़ी और राजकुमारी ने उन्हें धूप में सूखने के लिये रखा। उन्हें सूखाने लिये छोड़ कर वे सब महल में लौट गये।

दूसरे दिन राजकुमारी ने जाकर देखा तो एक मछली के अलावा बाकी सभी मछलियां सूख गयी थी। राजकुमारी को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने भीगी मछली से पूछा बाकी सभी मछलियां तो सूख

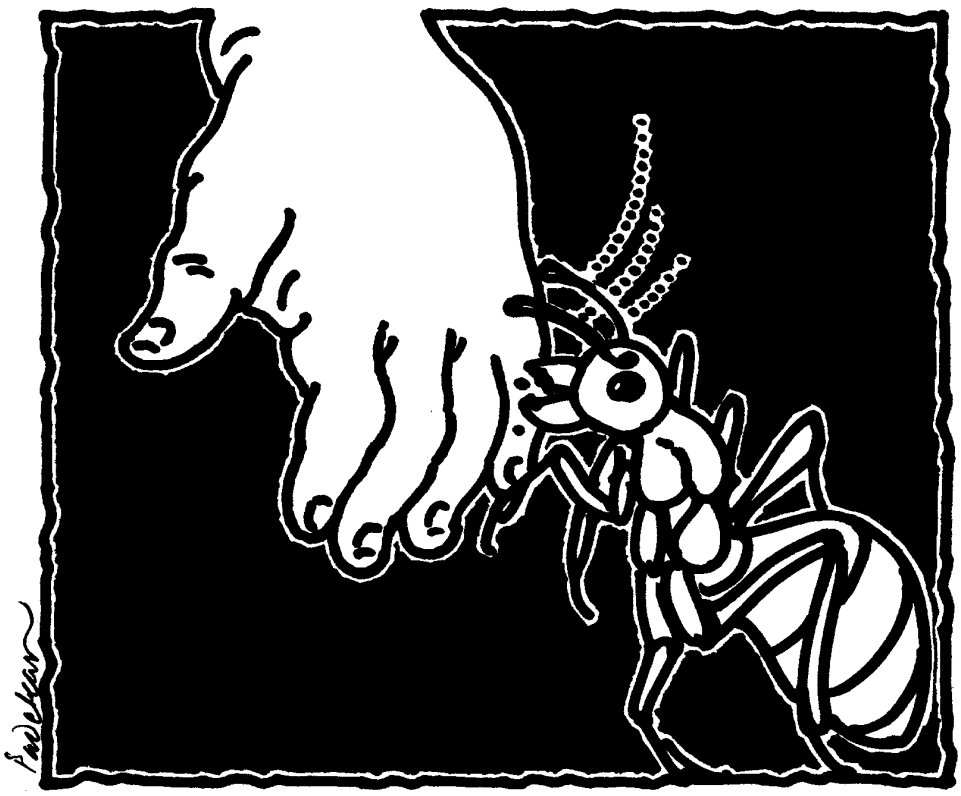

गयी, तुम क्यों भीगी रह गयी? मछली ने कहा कि इस गंजी ने मुझ पर सूर्यप्रकाश नहीं पड़ने दिया इसीलिये मैं भीगी रह गयी तो राजकुमारी ने गंजी से पूछा, तुमने सूर्य प्रकाश क्यों रोका? गंजी ने जवाब दिया। गाय ने घास नहीं खायी इसलिये मैं ऐसे ही पड़ा रहा।

तब राजकुमारी गाय के पास पहुंची और पूछा, तुमने घास क्यों नहीं खायी। गाय ने जवाब दिया कि मेरे मालिक ने मेरे बछड़े को दूध पीने के लिये नहीं छोड़ा इसीलिये मैंने घास नहीं खायी। राजकुमारी को सन्तोष नहीं हुआ उसने गो पालक से पूछा, तुमने बछड़े को क्यों नहीं छोड़ा? उसने अपनी पत्नी की तरफ इशारा किया और कहा उसने मुझे समय पर भोजन नहीं दिया तो इस क्रोध से मैं बछड़े को खोलना भूल गया। राजकुमारी ने गृहिणी से बात की और खोज जारी रखी।

गृहिणी भयभीत थी, राजकुमारी ने उससे पूछा, तुमने भोजन तैयार क्यों नहीं किया? उसने डरते-डरते जवाब दिया मेरा बेटा न जाने क्यों सुबह से रो रहा था, उसे चुप कराने के लिये मैं रूक गयी थी, इसीलिये रसोई बनानी रह गयी। राजकुमारी ने बालक से पूछा क्यों रोते थे ? उसने जवाब दिया, मेरी उंगली में चींटी ने काट लिया इसलिये मुझे रोना आया। तब राजकुमारी ने चींटी से पूछा कि तुमने बच्चे की उंगली में क्यों काटा तो उसने जवाब दिया, मैं क्यों न काटू, बच्चा अगर मेरे बिल में हाथ डालेगा तो मैं काटूंगी ही ना।

प्रस्तुत कहानी आंध्रप्रदेश की बालवार्ता है यहां के बुजुर्ग अपने पोतों तथा पोतियों को ये कहानी कहते हैं और जवाब मांगते हैं। कुदरती तत्वों के पारस्परिक सम्बन्ध की तरफ बच्चों का ध्यान खीचने के लिये दादा दादी यह कहानी अपने बच्चों को कहते होगें। सिर्फ एक जगह पर श्रंखला टूटने से कुदरत का समग्र चक्र टूट जाता है। क्या यह समग्र दृष्टि हम पा सकेंगे। यह कहानी श्री गंगाधर के सौजन्य से प्राप्त हुई।

निष्फल होने का निर्णय : आखिर क्यों?

अति श्रीमंत, महत्वाकांक्षी, बेझिझक इन्सान की यह बात है। उसके पास सुख सुविधा के सभी साधन तथा ढेर सारी सम्पति थी। ढेर सारी सम्पति होने पर भी उसे सन्तोष नहीं था। उसको निरन्तर चिन्ता रहती थी कि हमेशा मेरा नसीब मुझे साथ देगा या नहीं इसीलिये और ज्यादा धन वह पाना चाहता था। वह मानता था कि बुरे वक्त में उसके पैसे ही काम आयेंगे, कल का किस को पता। धार्मिक भाव वाले इस इन्सान ने सम्पति अधिक पाने के लिये भगवान का तप किया, शहर की बस्ती से दूर नदी किनारे उसने तप करना शुरु किया। दिन पर दिन बीत गये मगर तप जारी रखा। एक दिन एक साधु ने वहां से गुजरते हुए उसे देखा तो उसकी एकाग्रता देखकर प्रभावित हुये। एक

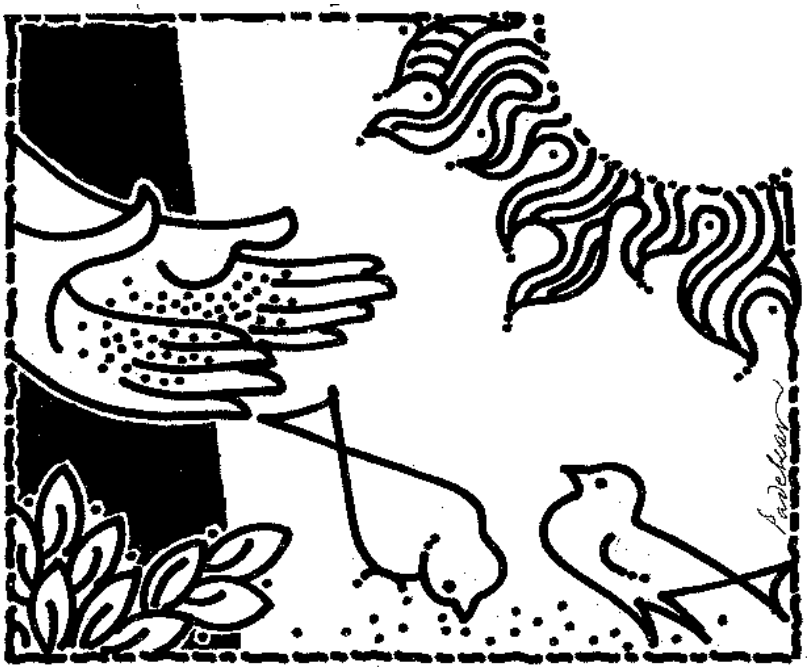

वक्त का हृष्ट-पुष्ट इन्सान अति धनवान होने पर भूख के कारण गरीब दिख रहा था। साधु को लगा कि इसका तप करने का हेतु क्या है? पूछ तो लूं, जब साधु को पता लगा कि यह इन्सान अपनी सम्पति को बढ़ाने के इरादे से तप कर रहा है, तब वह हँसने लगा। उन्होंने तप करने वाले को कहा कि मेरे पास ऐसी शक्ति है जिससे तुम अधिक धनवान बन सकते हो। वह इन्सान खुश हो गया।

मुझे ऐसा उपाय बतायें जिससे मैं किसी भी धातु को स्वर्ण बना सकूं। साधु धीरे से हँसकर बोले तथास्तु सामने पड़े हुये पत्थरो में से एक पत्थर ऐसा है, जो लोहे को स्वर्ण बना सकता है। धनवान आदमी को लगा कि मेरा अब नसीब जोर करने वाला है।

साधु का उपकार मानकर वह जादुई पत्थर की खोज में लग गया। लोहे का एक टुकड़ा लेकर हर पत्थर से छुआता रहा। लोहे का स्वर्ण न होने पर वह पत्थर नदी में फेंक देता था। शुरु में बहुत धीमे-धीमे, फिर बहुत तीव्रता से यह कार्य करता था। शाम होने को थी, इसीलिये तीव्रता से यह कार्य करता था क्योंकि ढेर में बहुत पत्थर बाकी थे जिनकी जांच करनी बाकी थी। अचानक उसका ध्यान लोहे पर पड़ा जो लोहे से स्वर्ण बन चुका था, लेकिन बदनसीबी यह थी कि तब तक वह पत्थर नदी में फेंका भी जा चुका था।

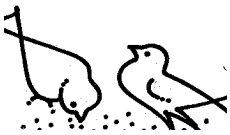

कहानी के नायक की तरह हम भी कई बार निष्फल होते हैं। निष्फल होने का हम अभ्यास करते हैं, बारबार पारस की पहचान नहीं कर पातें! जिसके कारण हम जीवन में मिले स्वर्ण तक की पहचान नहीं कर पाते और वह हमारी सब से बड़ी बदनसीबी है। मौका हाथ से कब सरक जाये इसका एहसास भी नहीं होता। इसी संदर्भ की हम हमारे दर्शन के साथ तुलना करे तो कई किसान पशुपालक, कारीगर लोग, कुदरती सम्पत्ति के स्त्रोत को जीवतं करके उत्पादक बना सकते हैं। लेकिन विकासशील राष्ट्र के वैज्ञानिकों तथा नीतिनिर्धारको ने जैसे निष्फल होने का तय कर लिया हो, इस तरह हमारे परम्परागत ज्ञान व सामयिक सूझबूझ की धरोहर की हमेशा उपेक्षा हुई है।

छोटा आकार : बड़ा विचार

बहुत दिन पहले बुद्ध भगवान ने जंगल के चूहे, बैल, मुर्गी, खरगोश, सांप, कुत्ता, पखंवाला अजगर वगैरह महत्वपूर्ण १२ प्राणियों को बुलाकर कहा कि आकाश गंगा की राशि में से एक-एक वर्ष तुम्हारे नाम करता हूं। भगवान बुद्ध की यह बात सुनकर सब प्राणी खुश हो गये परन्तु सबसे जरुरी यह प्रश्न था कि किसका वर्ष सबसे पहले रखा जाये और यहीं से सब मुश्किलों की शुरुआत हुई। चूहे ने कहा कि मैं बहुत बुद्धिशाली हूं इसीलिये हमारा वर्ष सबसे पहले रखा जाये। यह सुनकर बैल ने कहा कि मेरा कद सबसे बड़ा है इसीलिये

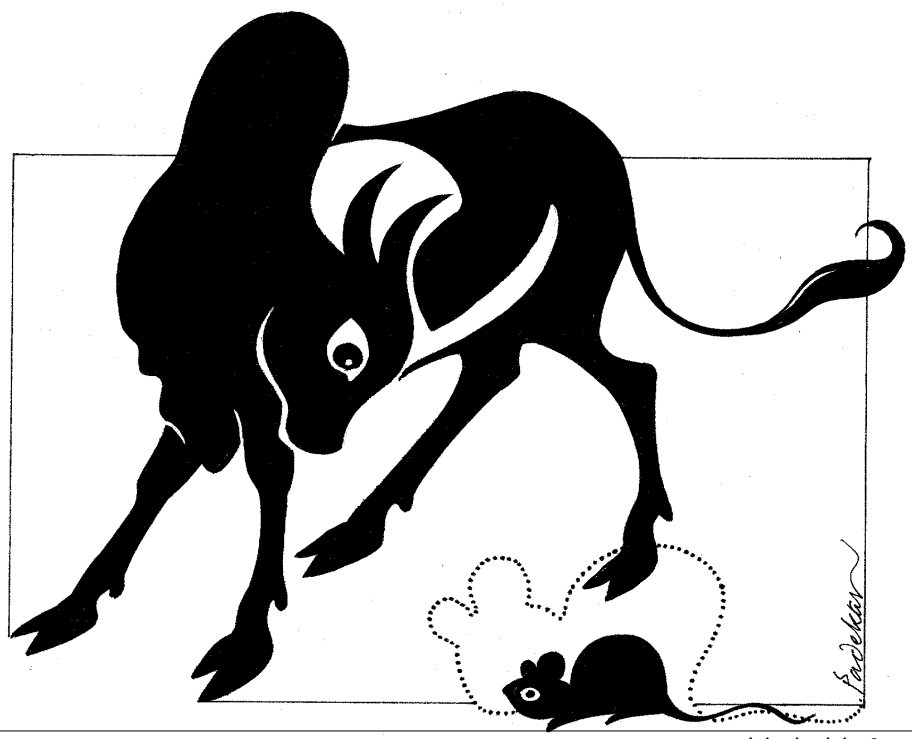

जैसे हो, वैसे ही भले

मेरा वर्ष पहले रखा जाये। दोनों प्राणी थोडी देर के लिये आमने सामने विवाद करने लगे कि बुद्धि महत्व की है या कद महत्व का है। थोडी देर में चूहा शान्त होकर बोला कि मैं स्वीकार करता हूं कि कद महत्व का है इसीलिये बैल को कहा कि अच्छा तो यह निर्णय हो गया कि कद बहुत महत्व का है। तुरन्त चूहे ने जबाब दिया, कि निर्णय इतना जल्दी नहीं होता मेरा कद तुम्हारे कद से ज्यादा प्रभावशाली है। यह सुनकर बैल ने कहा, क्या कहा? तुम एक छोटे जीव हो तुम्हारा अस्तित्व क्या? तू कैसे लोगों को प्रभावित कर सकता है। चूहे ने कहा, अच्छा यह निर्णय लोगों पर छोड़ देते हैं। यह सुनकर बुद्ध भगवान ने कहा, कि चूहे बैल के कद से छोटा है तद्उपरांत इसका निर्णय लोगों को करने दो। तुम दोनों में से जो अपने कद से लोगों को प्रभावित करे, उसकी जीत होगी।

इसके बाद चूहा तथा बैल दोनों सामने गांव में घुमने निकल पड़े बैल तथा चूहा जहां-जहां जाते वहां-वहां लोग चूहे को कौतुक से देखने के लिये इकट्ठे हो जाते और कहते कितना बड़ा चूहा। लोग बैल की तरफ जरा भी ध्यान नही देते। इस तरह लोगों को प्रभावित करके चूहे ने राशि चक्र में प्रथम स्थान हासिल कर लिया।

स्थानीय नवसृजन विरिष्ट तथा प्रभावशाली होना चाहिये जिससे लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकें? छोटे-छोटे नवीकरणों को प्रोत्साहित करने के लिये ठोस कार्य करने की आवश्यकता महसूस नहीं की? कुदरत की विशाल शृंखला के साथ समाजिक परिवर्तन एवं मानवीय दृष्टिकोण के साथ गठजोड़ का क्रम कब तक टालते रहेंगे।

अकाल में बीज की चिंता : मूक निगाहे, अनिश्चित दिशायें

समाज की ज्यादातर सम्पति जिनके पीछे खर्च होती है ऐसे साधन सम्पन्न लोग ढोंग को अपना अधिकार मानते हैं। आधुनिक विश्व की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण की बिखरती परिस्थिति में उनके व्यक्तिगत प्रयासों से कुछ फर्क पड़े ऐसा नहीं लगता, शायद इस प्रकार की उदासीनता समाज में सर्वव्यापी हो। अमीर, गरीब, स्त्री या पुरुष सब यही सोचते हैं कि हम क्या कर सकते हैं सब लोगों ने अपने आप को निःसहाय मान लिया है इसके विपरीत कुछ उत्साही लोग अकेले होते हुये भी शोध वृत्ति से प्रेरित

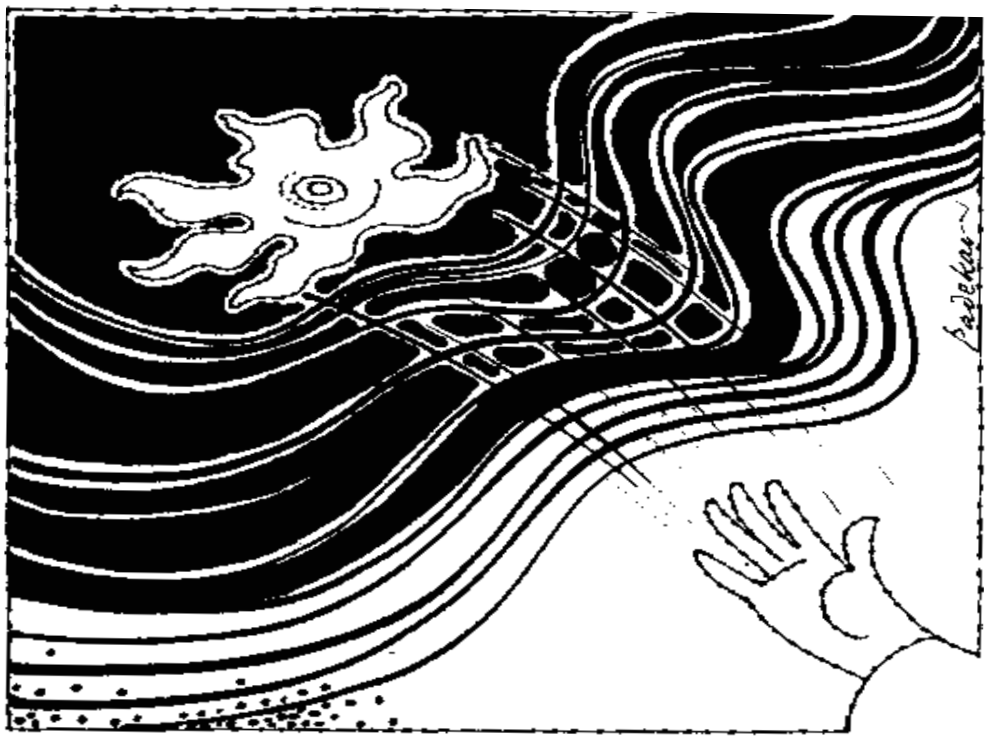

जैसे हो, वैसे ही भले

होकर कुछ नया-नया करते रहते हैं। ऐसा ही एक आदमी एक दिन समुद्र किनारे घूम रहा था। समुद्र किनारे घूमते-घूमते उसने कुछ मछलियों को समुद्र से बाहर तड़पते हुये देखा। समुद्र की लहर ने गुस्से में आकर मछलियों को बाहर फेंक दिया था। पानी के बिना तड़पती हुई मछलियों को देखकर उस मनुष्य को लगा कि यह मछलियां पानी के बिना इस सूखी जगह पर मर जायेंगी। उसे दया आयी। अभी वही मनुष्य एक के बाद एक मछलियों को पकड़ कर पानी में छोड़ने लगा । मछलियों को वापिस समुद्र में डालते हुये देखकर उसके नजदीक खड़ी हुई एक स्त्री को आश्चर्य हुआ। वह स्त्री उस दयावान मनुष्य के पास गयी और पूछा, तुम मानते हो कि तुम इन हज़ारो मरती हुई मछलियों को बचा सकते हो? तुम्हारे इस कार्य से इतनी सारी मछलियों की स्थिति में फर्क नहीं होगा। उस मनुष्य ने स्त्री की बात सुनते-सुनते ही एक मछली हाथ में ली तथा समुद्र के पानी में डाल दिया । इसके बाद स्त्री की ओर घूमकर कहा कि मैं इस मछली को तो कम से कम बचा सकता हूं।

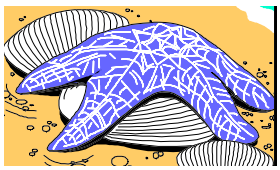

यह प्रबंधन विद्या शाखा में एक बहुत प्रचलित उदाहरण है, ऐसा पूछा जाता है कि हमारे में से कितने लोग निराशावादी मनोदशा रखते हैं। एक आम धारणा ऐसी है कि समाज सुधार में व्यक्तिगत प्रयास असरकारक नहीं। लेकिन ऐसा नहीं हैं। एक-एक व्यक्ति के प्रयास दूसरे व्यक्ति के लिये हमेशा फलदायी बन सकते हैं। अकेला एक व्यक्ति भी अपनी सामर्थ्य अनुसार कुछ न कुछ तो कर ही सकता है। अगर हम सबका भला नही कर सकतें, तो क्या एक व्यक्ति जीव का भी हित नहीं कर सकते? क्या अकेला चना भाड़ को फोड़ सकता है! सूझ बूझ आसपास की पत्रिका के जरिये हमने अकेले प्रयोगधर्मी लोगों को ढूंढ़ने का प्रयास शुरु किया है। क्या आपके पास ऐसे लोग हैं?

आपत्ति की सूचना से हम कब सीखेंगे

गांव से शहर की तरफ एक टोली इधर से उधर जा रही थी। हर व्यक्ति के कन्धों पर घर का थोड़ा सामान था। प्रत्येक के चहेरे पर अकाल की स्पष्ट छाप दिखायी देती थी। शहर के मार्गों पर कन्धो पर कावड़ लिये हुये, भूख से पीड़ित और मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ। इन मनुष्यों का आसपास की दुनिया या इन्सान के साथ जैसे कोई सम्बन्ध न हो इस तरह मूक तथा नीची निगाह करके सब चले जा रहे थे। इन लोगों की लम्बी पंक्ति के अन्त में चल रहे वृद्ध के लिये कावड़ का वजन उठाना काफी कष्टदायक लगता था। उनकी अस्थिर चाल और हृदय में से निकलती हुई हांफ थकान का अहसास करा रही थी। एक डग भी आगे न जा सके ऐसी स्थिति आ गयी। वृद्ध ने कन्धे पर से कावड़ उतारकर सावधानीपूर्वक जमीन पर रख दी इसके बाद घुटने पर सिर टेक कर नीचे बैठा। पास में एक फेरीवाला जोर

से आवाज़ लगाकर कोई खाने की चीज बेच रहा था। वहां से गुजरते हुए एक राहगीर को वृद्ध पर दया आ गयी। उसने अपनी पोटली में से एक चांदी का सिक्का निकाला और कुछ विचार किया। उसने सोचा कि वह कम है, तो एक ताम्बे का सिक्का भी निकाला और पास में जो खाने की चीज बिक रही थी उसे वृद्ध खा सके, इस प्रयोजन से दोनों सिक्के वृद्ध को दे दियें। वृद्ध ने धीमे से ऊपर देखा उसकी आंखों में आश्चर्य की चमक फैल गयी। वृद्ध बोला भाई मैं भिखारी नहीं हूं। हमारे पास खूब उपजाऊ जमीन है। जिस पर हर वर्ष हम अच्छी फसल लेते आये हैं। इस भीषण अकाल में अगले वर्ष बोने के लिये रखे बीज भी पेट की भूख मिटाने के लिये खा लिये हैं। राहगीर वृद्ध की गोद में वे दो सिक्के रखकर आगे बढ़ गया।

वृद्ध ने ताम्बे के सिक्के से फेरीवाले से कुछ खाना खरीदा बहुत मुश्किल से खड़ा होकर कांपते हाथों से कावड़ी में से गुदरी खिसकाई। गुदरी के नीचे एक छोटा बच्चा आंख बन्द करके पड़ा था। दुर्बल तथा अशक्त बच्चे को अपने आप भी खड़े होने की ताकत न थी। वृद्ध ने उसे बैठाया बच्चा धीमे-धीमे कटोरी में से खाना खाने लगा । वृद्ध बच्चे के सिर को सहला रहा था। जिससे माहौल हलका हो रहा था। फेरीवाला यह दृश्य देख रहा था वृद्ध ने कहा यह मेरा इकलौता बेटे का बेटा है। मेरा बेटा तथा बहू पिछले साल नदी की बाढ़ में बह गये थे। बच्चे ने कटोरी में से खाना खा लिया तब वृद्ध ने बैठकर कटोरी को चाट लिया यह देखकर फेरी वाले को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने कहा दादा आपको नहीं खाना। वृद्ध ने कहा कि इस चांदी के सिक्के से उसे अगले साल बोने के लिये बीज खरीदना है । फेरी वाले ने आश्चर्य से सिर हिलाया और चल दिया वृद्ध की यह बात ऐसी थी जिसे समझने के लिये किसान की आत्मा होनी चाहिये।

प्रिय वाचक मित्रों यह कहानी नोबल पारितोषिक लेखिका पर्ल अेस बक की है । इस कहानी की जड़ भले ही अन्य देश की हो लेकिन हमारी आज की परिस्थितियों के साथ पूरा उतरती है। एक साल अतिवृष्टि तो दूसरे साल सूखा जैसे वक्त से हम गुजर रहे हैं तब हमारे सबके मन में यही ख्याल गुजरता होगा कि जब पानी और कुदरती संसाधनों का ढेर हमारे पास था तब इसका थोड़ा संग्रह कर लिया होता तो कितना अच्छा होता । अभी भी वक्त है, अपने ऊपर जो अनुशासन रखता है, वह सुखी है।

जैविक विविधता और स्थानीय ज्ञान : भूलती हुई परम्परायें

वर्षों पहले की यह बात है। रास्ते से गुजरते हुए एक राहगीर को मुर्गी के अन्डे जैसा एक गेहूँ का दाना मिला। वह दाना मुसाफिर ने राजा को भेंट किया बदले में बख्शीश लेकर मुसाफिर चला गया। इतना बड़ा दाना देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। राजा ने पण्डितों को यह पता करने के लिये कहा कि यह गेहूँ का दाना कौन से मौसम में पकता है। ढूंढ निकालने की आज्ञा दी। पण्डितों ने सब ग्रन्थ खोल दिये फिर भी इतने बड़े दाने का उल्लेख कहीं नहीं मिला।

जैसे हो, वैसे ही भले

इसके बाद राजा ने किसी वृद्ध किसान को बुलाकर इस के बारे में पूछताछ करने को कहा। राजा के हुक्म से सिपाहियों ने वृद्ध किसान को ढूंढ निकाला । चेहरे पर बहुत सी झुर्रियों वाले तथा झुकी हुई कमर वाला किसान राज दरबार में आया। उस मुर्गी के अन्डे जैसा दाने के बारे में पूछे जाने पर उसने कहा - महाराज मैंने अपने जीवन में इतना बड़ा दाना कभी नहीं देखा शायद मेरे पिता को इस प्रकार के दाने के बारे में जानकारी होगी। इसके बाद किसान के पिता को भी राज दरबार में बुलाया गया। एक लकड़ी की सहायता से चलता हुआ वह राजदरबार में दाखिल हुआ। उससे भी मुर्गी के अन्डे जैसे दाने के बारे में पूछा गया। उसने कहा - महाराज हमारे जमाने में इससे छोटा दाना पकता था। परन्तु इतना बड़ा दाना मैंने भी नहीं देखा। मेरे पिता को शायद इस बात की जानकारी होगी। इस वृद्ध के पिताजी अभी तक जिन्दा है यह सुनकर सब को आश्चर्य हुआ।

राजा ने उनको बुलाने के लिये अपना एक आदमी भेजा। इतनी बड़ी उम्र में भी इस वृद्ध को सीधा चलता हुआ देखकर सब को वृद्ध का तेजस्वी माथा, चमकती हुई आँखें, युवा को भी शरमा दे ऐसी चाल थी। इस दाने को देखकर वृद्ध के चहेरे परमआनंद की लहर छा गयी और बोला अरे! यह तो हमारे जमाने में देखा हुआ दाना है।

प्रिय वाचक मित्रों, प्रस्तुत कहानी टॉल्सटोय ने लिखी हैं। गेहूँ का दाना ज्ञान का ऐसा प्रतीक है जिसे हम भूल रहे हैं। पीढी दर पीढ़ी गेहूँ के दाने के कद की तरह ज्ञान का कद क्यों कम हो रहा हैं। बुजुर्ग के पास ऐसा कौन सा ज्ञान है जो युवा पीढ़ी के पास नहीं है? भूलते हुए ज्ञान को बचाने के लिये क्या करना चाहिये? कहने के लिये विकास और वैभव की तुलना में यह भव्य विरासत आज क्यों कम हो रही है ? क्या परम्परागत बीज और ज्ञान को आज की विकास की प्रक्रिया के साथ जोड़ देना आवश्यक नहीं है?

ज्ञान बड़ा या बुद्धि

बाल कौवा जब युवा अवस्था में पहुंचता है तब प्रमुख कौवा उनकी परीक्षा लेकर तय करता है कि उनको टोली में शामिल करना चाहिये या नहीं।

एक दिन ऐसे ही तीन बाल कौंवो का जो युवा अवस्था में पहुंचने वाले थे, परीक्षा का समय आया। प्रमुख कौवे ने प्रथम कौवे से पूछा दुनिया में सबसे ज्यादा किससे बच कर रहना चाहिये। प्रथम कौवे ने तुरन्त जवाब दिया, बाण। प्रमुख कौवा जवाब सुनकर उड़ गया और उड़ कर दूसरा कौवा जिस डाल पर बैठा था वहां गया। फिर से यह प्रश्न पूछा,

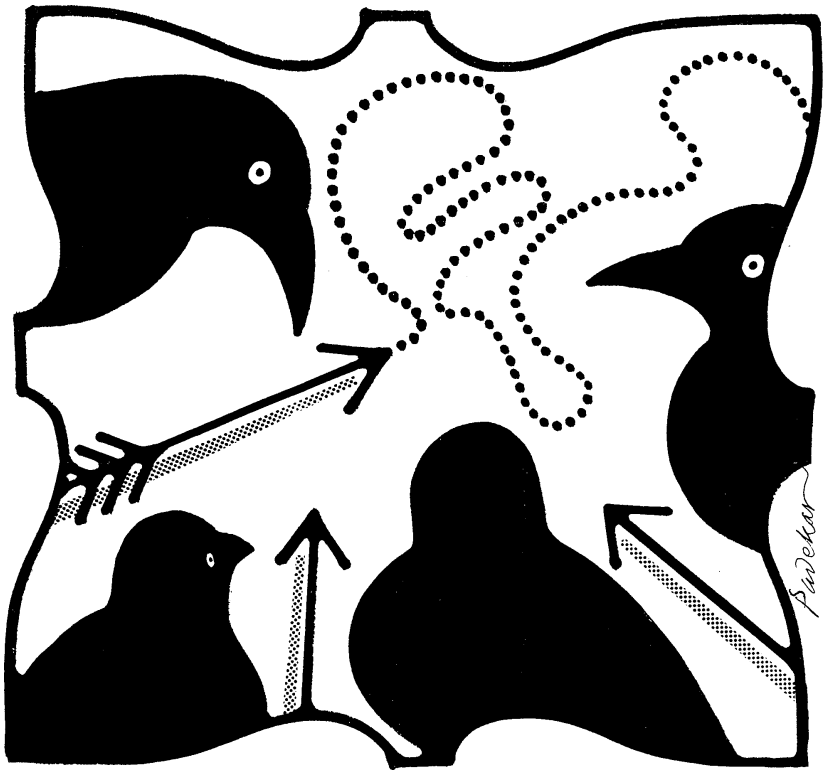

दुनिया में सबसे ज्यादा किससे बचकर रहना चाहिये? कौवे ने थोड़ा विचार करके जवाब दिया । कुशल तीर अन्दाज से क्योंकि धनुषधारी मुझे निशाना बनायेगा तो मैं घायल हो जाऊंगा या मर जाऊंगा। प्रमुख कौवा अकेले कौवे के पास गया और वही प्रश्न पूछा कि किससे बचकर रहना चाहिये ।

कौवे ने थोड़ी देर विचार किया फिर कुछ सोचता हुआ बोला। मेरा मानना है कि अकुशल धनुष्य धारी से बचकर रहना चाहिये।

प्रमुख कौवे ने आश्चर्य से पूछा - तुमने ऐसा जवाब क्यों दिया । तीसरे कौवे ने सिर हिलाते हुये जवाब दिया कि कुशल धनुष्यधारी तो निश्चित तीर चलायेगा ऐसे समय पर दाये से बाये खिसककर या उड़कर बच सकते हैं। परन्तु अकुशल धनुष्यधारी का तीर कौनसी जगह लगेगा, यह निश्चित नहीं है इसीलिये बच कर कहां उड़ना है यह भी तय नहीं कर सकते। जवाब सुनकर प्रमुख कौवा और समस्त कौवे की टोली खुश हो गयी प्रमुख कौवे को शायद उसका वारिस मिल गया था।

प्रिय वाचक मित्रों, कौवे के समाज में भी नयी दृष्टि की कद्र की जाती है। लेकिन कम नसीब से मानव समाज में यह सन्देश नहीं पहुंचा। निरन्तर नयी सोच और समस्याओं को अनेक अनोखी दृष्टि से समझकर इसका समाधान ढूंढने वाले लोगों की सूझबूझ के ज्ञान को हम कहां पहचानते है हम? नयी-नयी सूझबूझ से निरन्तर शोध करने वाले धुनी लोगों को पहचान कर, उन्हें सम्मान देने का यह हमारा छोटासा प्रयास है। ऐसे धुनी लोग हरेक गांव में होते है जरुरत है उन्हें सक्षम बनाने की, उनसे सीखने की!

रसहीन धरा हुई, दयाहीन राजा हुआ

जाड़ों की गुलाबी सर्दी में एक वृद्ध दम्पत्ति आग ताप रहे थे। पक्षियों की मधुर आवाज सब के दिल में गूंज रही थी। इतने में एक घुड़सवार वहां आया और घोड़े से नीचे उतर कर वृद्ध माता को नमन किया। मुझे बहुत प्यास लगी है, पानी देंगे। दयालु स्वभाव की माता ने गन्ने के खेत की तरफ उंगली करके कहा बेटा गन्ने का रस बहुत ही मीठा है यही देती हूँ। माता उस घुसवार को गन्ने के खेत की तरफ ले गयी। गन्ना काटकर उसके हाथ में रस का गिलास दिया। आश्चर्य से घुड़सवार गन्ने का ताजा रस एक ही सांस में पी गया।

उसने कहा अभी प्यास नहीं बुझी। एक गिलास और दो । माता फिर से गन्ने का रस निकालने लगी पर एक भी बूंद रस नहीं निकला। चिंतित होकर माता ने कई गन्ने काटे मगर रस नहीं निकला फिर आंखों में आंसू के साथ बोली "रसहीन हुई धरा, दयाहीन हुआ राजा।" नहीं तो ऐसा कभी नहीं होता ऐसा कहकर माता फिर से रोई । यह शब्द सुनते ही घुड़सवार माता के पैर में झुककर माफी मांगते हुये बोला। वह राजा मैं ही हूं, मुझे माफ करो। घुड़सवार राजा ने कहा मुझे गन्ने का मधुर रस पीते ही विचार आया कि इस उपजाऊ जमीन में से ढ़ेर सारी फसल लेने वाले किसानों के पास से मैं कर क्यों न लू? मुझे क्षमा करो मां मुझे तो सिर्फ आपका आशीर्वाद चाहिये। माता ने घुड़सवार राजा को खड़ा किया और फिर से गन्ना काट कर रस निकालने लगी तो रस की धारा से गिलास भर गया।

कवि - सूरसिंह गोहिल कलापी

क्या हाल में रसहीन हुई हमारी धरा, नदियां, झरने, अनाज, सब्जी, फल तथा अन्य कुदरती संसाधनों के लिये दयाहीन प्रशासकों और लोभी प्रजा के बीच के स्वार्थी सम्बन्ध तथा उनकी संकुचित दृष्टि जवाबदार नहीं हो सकती। अब तो प्रजा भी सबसिड़ी और राहत का फायदा लेकर कुदरती संसाधनों को निचोड़ने के लिये तत्पर बनी है। खेती, पर्यावरण और अन्य कुदरती संसाधनों की चर्चा करने वाले हमारे विद्वान लोग जुताई, खाद, पानी और प्रदूषण के अलावा अदृश्य मानवीय दृष्टिकोण जैसे कि संवेदना, दृष्टि, भावना, मनोबल के बारे में कुछ सोचेंगे या नहीं।

जैसे हो, वैसे ही भले - टूटे घड़े की कहानी

बहुत समय पहले एक भिश्ती रहता था जिसके पास दो घड़े थे। इन्हें वह एक बांस की लकड़ी के दोनों सिरों पर बांधकर कंधे पर लटकाकर पानी भरने जाता था। इनमें से एक घड़े में दरारें पड़ गई थीं और उसमें से पानी रिसता था। दूसरा घड़ा सही - सलामत था। नदी से पानी भरकर जब वह चलता, तो मंजिल पर पहुंचते-पहुंचते टूटे घड़े में केवल आधा पानी ही बचता, जबकि दूसरा घड़ा पूरा भरा रहता।

दो सालों तक भिश्ती अपने दोनों घड़ों से उसी रास्ते मालिक के घर पानी पहुंचाता रहा। उसके एक घड़े से पानी रिसने के कारण हर फेरी में वह दो के बजाए डेढ़ घड़ा पानी ही पहुंचा पाता। आधा घड़ा पानी

रास्ते में ही गिर जाता। भिश्ती की मेहनत को इस प्रकार व्यर्थ जाता देखकर टूटा घड़ा बहुत दुखी हुआ और उसे अपनी कमजोरी पर बहुत अफसोस हुआ। साबुत घड़ा इस घमंड़ में इतराता कि वह अपने मालिक की पूरी सेवा कर रहा है।

आखिर एक दिन टूटे घड़े से रहा नहीं गया। उसने अपने मालिक से अपनी कमजोरी के लिए माफी मांग ही ली। उसने कहा, 'मालिक मुझे क्षमा करें, मैं बहुत शर्मिंदा हूं।'

भिश्ती ने कहा, 'किस बात के लिए क्षमा करूं? और तुम शर्मिंदा क्यों हो?'

'पिछले दो साल से मैं आपकी आधी मेहनत व्यर्थ करता आ रहा हूं। मुझमें जो दरारें है उनसे आधा पानी रास्ते में ही गिर जाता है,' घड़े ने उदासी भरे स्वरों में कहा।

भिश्ती को टूटे घड़े पर दया आई। उसने प्यार से कहा, 'जब हम पानी पहुंचाने मालिक के घर जा रहे हों, तब तुम सड़क पर खिले सुंदर फूलों को देखना । सभी फूल सड़क में उसी किनारे लगे हैं जिस तरफ तुम लटकते हो ।

सचमुच सड़क के जिस किनारे टूटा घड़ा लटकता था, वहां सुंदर खुशबूदार फूलों वाले पौधे खिले थे, जिन्हें देखकर टूटे घड़े के उद्विग्न मन को थोड़ी शांति मिली। पर उसे साल रही ग्लानि इससे मिटी नहीं। तब भिश्ती ने उसे समझाते हुए कहा, 'क्या तुमने ध्यान दिया, कि ये सुंदर फूल सड़क के केवल उस ओर उगे हैं, जिस ओर तुम लटकते हो, दूसरी ओर नहीं जहां यह दूसरा घड़ा लटकता है? मैं तुम्हारी कमजोरी के बारे में जानता था और इसलिए मैंने उसे लाभ में बदलने की विधि भी ढूंढ़ ली । मैंने सड़क के किनारे ये सुंदर फूलवाले पौधे रोप दिए हैं। तुमसे जो पानी चूता है, उससे ये पौधे दो सालों तक सिंचते रहे और अब यह इन सुंदर फूलों से लद गए हैं। इन फूलों से मैं अपने मालिक के घर को सजाता हूं और वे मुझ पर कितना प्रसन्न होते हैं? यदि तुम बूंद-बूंद पानी न टपकाते, तो यह सारी सुंदरता कहां से आती?'

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६० पर देखिये।)

गेहूं के दाने में छिपा विश्व!

हजारों साल पहले ईरान में एक संत हुए-संत जरथुष्ट्र। उस समय ईरान में राजा विस्तास्पा राज करते थे। एक बार राजा विस्तास्पा अपने राज्य के दौरे पर निकले, लौटते हुए वे संत जरथुष्ट्र से मिले और उन्हें कहा कि वे उन्हें प्रकृति के नियम समझायें। इसके जवाब में संत जरथुष्ट्र ने राजा को गेहूँ का एक दाना दिया। राजा ने संत के इस कार्य को अपना मज़ाक समझा और बेहद क्रोधित होते हुए गेहूँ का वह दाना फेंक दिया।

जरथुष्ट्र ने गेहूँ का वह दाना उठाया और अपने शिष्यों को दिखाते

हुए कहा कि एक दिन राजा को अपनी गलती का अहसास अवश्य होगा, तब गेहूँ का यही दाना राजा को सबक सिखाएगा। कई साल गुजर गए। अब तक विस्तास्पा बहुत महान राजा बन चुका था, परन्तु तब भी कई सारे विचार विस्तास्पा परेशान करते थे। कई बार वह यह भी सोचता कि जीवन की शुरुआत कैसे होती है, संसार बनने से पहले यहां क्या था? राजमहल में किसी के भी पास इन प्रश्नों के जवाब नहीं थे। इसी बीच संत जरथुष्ट्र की लोकप्रियता भी निरन्तर बढ़ रही थी। राजा को भी इसका आभास था, एक दिन राजा ने संत जरथुष्ट्र से अपने बुरे व्यवहार के लिए माफ़ी मांगते हुए उन्हें अपने दरबार में आमंत्रित किया, साथ ही अपने सिपाहियों और नौकर-चाकरों के साथ बेशुमार हीरे जवाहरात भी संत को भेंट स्वरुप भिजवाये। संत जरथुष्ट्र ने राजा की भेंट को अस्वीकार करते हुए उसे लौटा दिया। साथ ही गेहूँ का वह दाना भी भेजा जो, बहुत पहले एक बार राजा गुस्से में छोड़ गया था। राजा ने इस बार गेहूँ का वह दाना देखकर सोचा कि यह अवश्य कोई चमत्कारी दाना होगा। इस दाने को राजा ने सोने की एक डिब्बी में रखकर अपने खजाने में रख दिया। राजा को अब किसी चमत्कार की प्रतीक्षा थी।

महीनों गुज़र गए, परन्तु कोई चमत्कार नहीं हुआ। आखिरकार राजा ने प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक चंद्रगच को अपने दरबार में आंमत्रित किया और आग्रह किया कि वे उनके राज-गुरु बनना स्वीकार करें। चंद्रगच ने राजा विस्तास्पा का आग्रह स्वीकार कर लिया। वे ईरान के राजगुरु के रुप में वहां पहुंचे। राजा ने चंद्रगच को गेहूँ का वह दाना दिखाते हूए पूरी कहानी सुनायी।

चंद्रगच ने कहा.....

चंद्रगच ने संत जरथुष्ट्र और गेहूँ के दाने के बारे में राजा को क्या कहा? इस अंक में हम इस कहानी का आधा भाग ही प्रकाशित कर रहे हैं। यहां छपी इस कहानी के आधार पर आप सोचें कि चंद्रगच ने क्या कहा होगा?

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६० पर देखिये।)

तोता आखिर क्यों उड़ा?

एक सुखी-सम्पन्न गांव था जहां लोगों में, पशु पक्षियों व प्रकृति में गजब का संतुलन व सामंजस्य था। लेकिन एक बार सूखा पड़ा, फसलों का नुकसान हुआ और यह संतुलन बिगड़ गया । एक दिन एक महिला अपने खेत से जो कुछ अनाज बटोर सकती थी, बटोर कर घर ला रही थी । रास्ते में महिला को एक तोता मिला जो उसे घूर रहा था। महिला ने पूछा, क्या बात है? क्यों घूर रहे हो? तोता बोला कि मैं तुम्हारे गले के हार को देख रहा हूं और सोच रहा हूं कि वह हरे रंग का पत्थर जो हार में जड़ा है क्या अनाज का दाना तो नहीं। महिला तोते का इशारा समझ गई और पूछ बैठी, तुमने आज कुछ

खाया नहीं क्या ? कैसे खाता, सारा बिखरा हुआ दाना तो तुम खेत से बटोर लाई हो, तोते ने जवाब दिया।

महिला झेंप गई लेकिन जल्दी ही संभल कर तोते को घर आने का निमंत्रण दिया और कहा, घर में बच्चे भी भूखे हैं, तुम भी चलो और मिल बैठ कर खा लेंगे । महिला को अपनी झेंप मिटाने का इससे सरल कोई उपाय नहीं सूझा और उसने सोचा कि भूखा तोता उसके साथ चल देगा। इसके साथ उसे यह भी लगा कि तोते से किए गये अन्याय अर्थात् उसके हिस्से का अनाज भी बटोर लाने की भरपाई भी हो पायेगी । महिला को लगा तोता उसके साथ चल देगा लेकिन महिला के आग्रह को अनदेखा कर तोता फुर्र से उड़ गया। महिला आश्चर्यचकित देखती रही।

तोता क्यों उड़ गया? क्या उसे लगा कि यदि उसने देर कर दी, तो और लोग भी खेतों से अनाज इकट्ठा कर घर चले देंगे? क्या उसे याद आ गया कि उसके भी बच्चे भूखे हैं? या क्या उसे महिला पर तरस आया कि बेचारी अपने खेत के अलावा और कहीं से अनाज नहीं बटोर सकती है? या उसे लगा कि वह तो कहीं से भी अनाज ला सकता है? तोते के अचानक उड़ जाने के और कई कारण भी हो सकते हैं।

कर्नाटक के शिमोगा जिले की लम्बाडा जनजाति की महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले लोकगीत पर आधारित है यह कहानी । गीत में अकाल के दौरान भी अनाज पर पक्षियों के अधिकार की एक सांस्कृतिक सोच उभर कर सामने आती है। लेकिन इस सोच में निहित है समाज की वह समझ जिसका विश्लेषण समय व स्थान विशेष के आधार पर बदलता रहता है ।

हम चाहते हैं कि आप हमें बतायें कि आप के विचार से तोता क्यों उड़ गया? आखिर महिला के निमंत्रण को स्वीकार न करने के पीछे क्या सोच रही होगी तोते की। आज के परिप्रेक्ष्य में यह कहानी कैसे खरी उतरती है।

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६१ पर देखिये।)

एक बेल को भी है, जीने का अधिकार

आज से कइसो वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में चोलावंश के राजा परिवालल का राज्य था। राजा दयालु हृदय का था। अपनी प्रजा के दुःख-दर्द के प्रति संवेदनशील भी था और यही कारण था कि पूरे राज्य में उसकी उदारता की चर्चा रहती थी।

एक बार जंगल से गुजरते हुए राजा प्यास बुझाने के लिए एक झरने के पास रुका। प्रकृति के अनुपम सौंदर्य को देखकर राजा ने सोचा कि कुछ देर आराम ही क्यों न कर लिया जाये । लेकिन जब राजा विश्राम

के बाद रथ के पास वापस आया तो क्या देखता है कि एक नीलोत्पल नाम की बेल, जिसमें सफेद फूल खिले थे, रथ के पहिये से लिपटी हुई है ।

राजा चक्कर में पड़ गया क्योंकि यदि वह रथ पर सवार हो कर आगे बढ़ता है तो लिपटी हुई बेल व खिलते हुए फूल नष्ट हो जाते हैं । संवेदनशील व दयालु होने के कारण राजा परिवालल ने जो निर्णय लिया वो अचंभित करने वाला था - राजा ने अपना रथ वहीं छोड़ दिया और पैदल महल की ओर चल दिया ।

(क्या आप बता सकते है कि राजा ने ऐसा क्यों किया? अपने दरबार में इस घटना का क्या ब्यौरा दिया? और आज के परिप्रेक्ष्य में राजा द्वारा उठाये कदम का क्या महत्व है?)

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६१ पर देखिये।)

चावल ही क्यों, गेहूं क्यों नहीं?

हालांकि गेहूं बिना भोजन की कल्पना करना भी कठिन है तिस पर भी विश्वभर में धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक क्रियाकलापों में चावल को प्राथमिकता दी जाती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक चावल लगभग हर गतिविधि में अहम् भूमिका निभाता है।

पूजा-पाठ में तिलक के साथ चावल के एक-दो दाने चिपका ही दिए जाते हैं। अपने मायके से विदा होती हुई नव-विवाहिता आंगन में कुछ

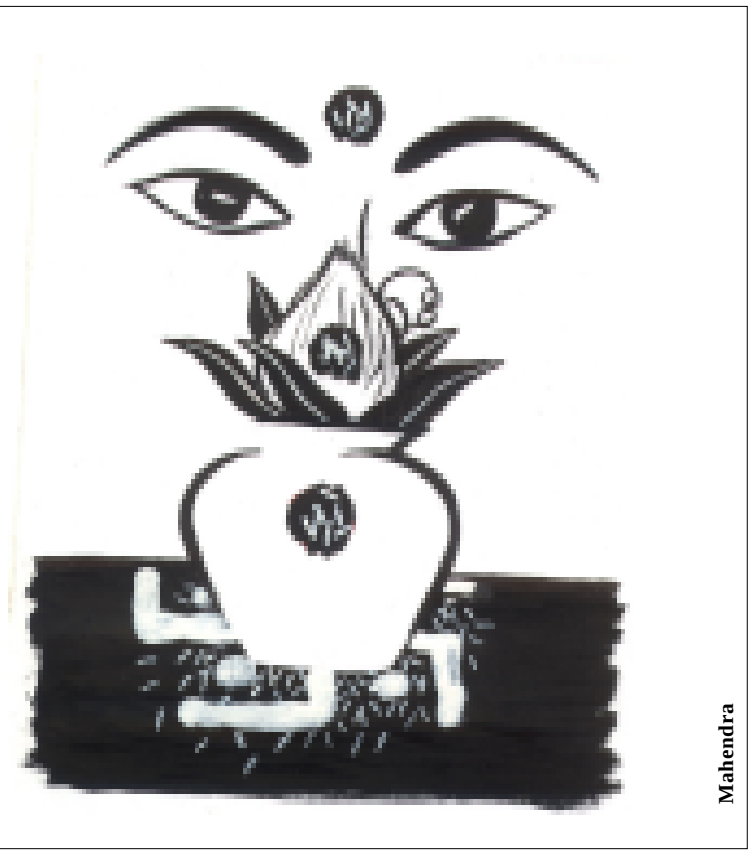

Mahendra

चावल गिरा कर बिछड़ने का संकेत देती है। चीन में तो सुहागरात के दिन नव दम्पति एक ही बर्तन से कुछ चावल खाते हैं, कहते हैं ऐसा करने से विवाह की सफलता के अतिरिक्त अगले जन्म में पुर्नमिलन की संभावना बनी रहती है।

एशिया के लगभग सभी देशों के इतिहास में चावल की धार्मिक व सांस्कृतिक भूमिका का विशेष चित्रण है। पश्चिमी सभ्यताएँ भी चावल के इस असर से बची नहीं है । गिरजाघर से विदा होते हुए नव दम्पति पर चावल की बौछार करना शुभ शगुन माना गया है। सुदूर पूर्व की तो पूरी संस्कृति ही चावल पर आधारित है - चाहे जापान हो या चीन और चाहे फिलीपीन हो या थाईलैन्ड ।

(आखिर ऐसा क्यों है कि एक प्रमुख खाद्यान्न होने के बावजूद भी गेहूं को वह धार्मिक व सांस्कृतिक दर्जा न मिल पाया जो चावल को मिला है? क्या कारण है कि चावल को प्रत्येक समाज ने यथासंभव आदर ही दिया है? इस पहेली को सुलझाने में अपना योगदान दें।)

असली मूर्तिकार कौन ?

रंगपुर नामक गांव में एक मूर्तिकार रहता था। अपना पूरा जीवन उसने मूर्तियां तराशने में बिता दिया। जीवन का शायद ही कोई रुप था जो उसकी कला से अछूता रहा हो ।

इस असाधारण प्रतिभा के धनी इस मूर्तिकार की कला की विशेषता यह थी कि उसकी बनाई मूर्तियां जीवंत लगती थीं। देखने से ऐसा लगता था कि मूर्तियां कभी भी बोल पड़ेगी । एक स्त्री को तो अपने पति की मूर्ति व पति में अंतर करना मुश्किल हो गया था।

मूर्तिकार अपने काम में इतना व्यस्त रहता कि उसे पता ही ना चला कि कब दिन बीता और कब रात ने अपनी चादर फैला दी । उसका दिन तो छेनी व हथौड़ी से शुरु होता और उन्हीं के साथ खत्म हो जाता । मूर्तिकार के ये दोनों साथी अकसर उसके साथ ही सोते थे ।

रंगपुर के वासियों का इस असाधारण प्रतिभा से कम ही सामना होता । मूर्तिकार बोलता बहुत कम था - उसे छेनी व हथौड़ी से फुर्सत ही न मिलती थी। लोग औजारों की आवाज़ से ही भांप जाते कि आज मूर्तिकार क्या बना रहा है। ऐसा था लोगों और मूर्तिकार में संवाद।

अपनी मृत्यु से पूर्व मूर्तिकार ने अपनी एक दर्जन मूर्तियां बना डाली थीं । फर्श पर बिछी इन मूर्तियों में ही उसकी भी शय्या बिछा दी गई थी। जब मृत्यु के देवता यमराज के दूत मूर्तिकार की आत्मा लेने उसके घर पहुंचे तो दृश्य देखकर दंग रह गये । आखिरकार सभी एक से लग रहे थे। क्या यमदूत मूर्तिकार की आत्मा ले जा पाये? यदि हां, तो कैसे?

क्या गाय को न्याय मिला?

तमिलनाडु के चोलावंश के राजा अपने निष्पक्ष न्याय के लिए लोकप्रिय थे। उन्होंने अपने महल के पास के मंदिर में एक घंटी लटकवायी। इस घंटी को कोई भी किसी भी समय बजाकर न्याय पा सकता था। परन्तु घंटी तब ही बजाई जाती थी जब फरियादी को कहीं भी न्याय नहीं मिलता था ।

एक दिन अचानक घंटी बजी । आवाज सुनकर बहुत से लोग इकट्ठे हो गये और देखकर दंग रह गये कि फरियादी के रुप में वहां एक गाय खड़ी थी । इतने में राजा भी आ गये । राजा को भी हैरानी हुई मगर तुरन्त ही वो गाय के पीछे-पीछे चल दिये । गाय एक जगह

आकर रुकी जहां पर एक बैल मृत पड़ा था। राजा ने वह रथ पहचान लिया जिससे बैल की मृत्यु हुई थी, वह रथ तो राजकुमार का था । यानी बैल की मृत्यु राजकुमार के रथ से हुई थी। राजा परेशान होकर फरियादी गाय की ओर देखने लगे क्योंकि अब समय था न्याय का और राजा के लिए परीक्षा का ।

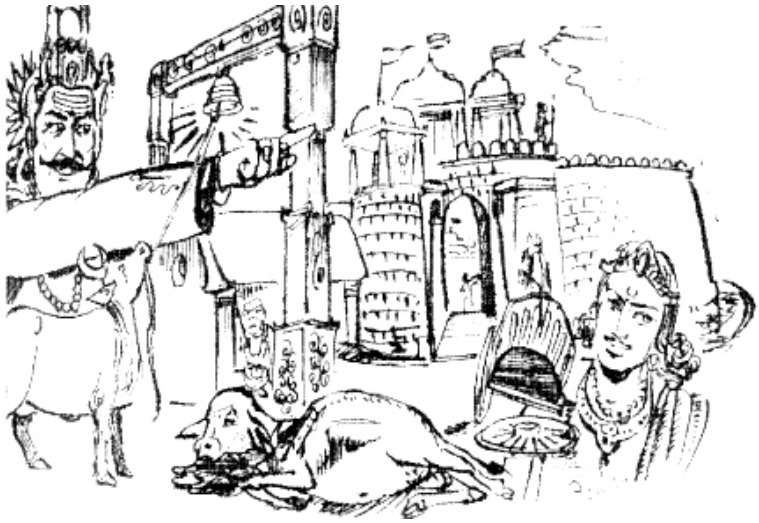

क्या आप बता सकते हैं कि राजा ने क्या न्याय दिया? क्या राजा अपने निष्पक्ष न्याय की छवि को बरकरार रख पाया? क्या गाय संतुष्ट होकर अपने घर लौट पायी?)

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६१ पर देखिये।)

सुन्दरता क्या है?

एक तालाब में बतख ने अंडे दिये जिसमें से एक अंडे का आकार कुछ बड़ा था। समयानुसार उन अंडों से चूजे निकले, मगर एक चूजा बड़ा और बद्सूरत था । यह देखकर चूजों की मां ने उसको दुत्कार दिया और कहा कि तुम मेरे बच्चे नहीं हो क्योंकि तुम सुन्दर नहीं हो और यह कह कर अन्य चूजों को लेकर चली गयी। बदसूरत चूजा दोस्ती के लिए खरगोशों के पास गया मगर वहां भी उसे तिरस्कार ही मिला। अन्त में दुःखी होकर उसने अकेले रहने का फैसला कर लिया। समय बीतता गया । वह अकेला ही उसी तालाब में तैरता रहता था। एक दिन उसने देखा कि आकाश में हंसो का झुंड चला जा रहा है। उसने सोचा काश मैं भी

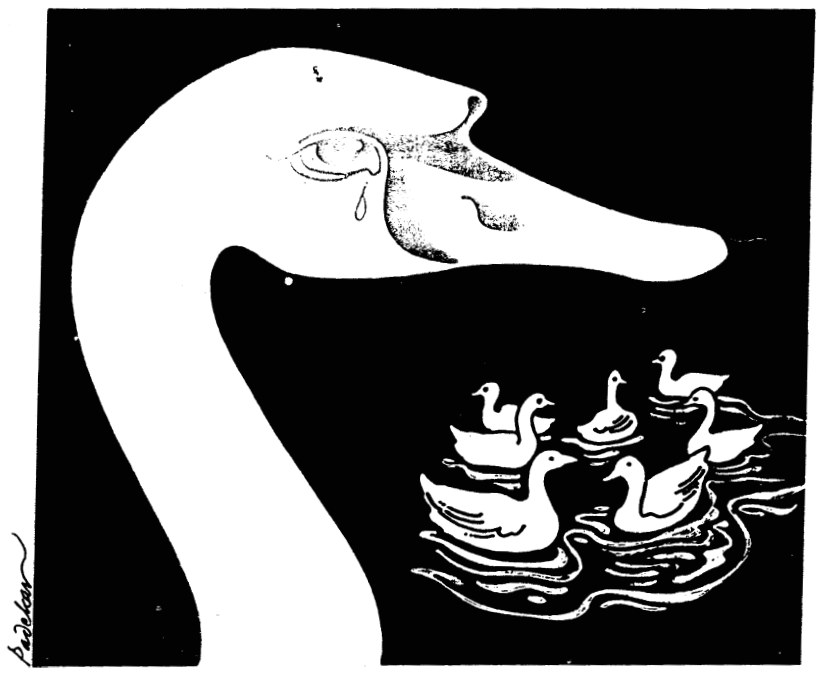

इतना सुन्दर होता तो अपनी जाति के झुंड में रहकर जीवन व्यतीत करता । इतने में एक हंस उसकी ओर चला आया। हंस ने उसकी हंसी उड़ाने की बजाए उसे अपने झुंड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और कहा कि तुम हमारे साथ चलो । यह सुनकर बदसूरत चूजे ने अपनी शक्ल पानी में देखी तो उसने पाया कि वाकई वह भी बहुत सुन्दर है और खुशी-खुशी वह हंसों के झुण्ड में शामिल होकर बाकी का जीवन व्यतीत करने लगा ।

(सुन्दरता क्या है - वह जो बाहर से देखने में लगती या जो आन्तरिक होती है । क्या कारण था कि बतख ने अपने बच्चे का त्याग केवल सुन्दर न होने के कारण किया? क्या हंस का चूज़ा बद्सूरत होता है? इस गुत्थी को सुलझाने की कोशिश करें जो कि बदसूरत चूजे के मन में बनी रही ।)

नर या मादा?

एक दिन एक मालवाहक जहाज तोरोजा बन्दरगाह पर आ कर रुका। जहाज के व्यापारी के पास कुछ बतखें और एक लकड़ी का काले रंग का टुकड़ा था । उसे अचानक कुछ सूझा और वह वहां के राजा के दरबार में गया । व्यापारी राजा के दरबार में दो काली बत्तखें और लकड़ी का टुकड़ा लिये हाजिर हुआ । वहां उसने भरे दरबार में राजा से दो प्रश्न पूछे । एक, दोनों बत्तखों में कौन नर और कौन मादा है और दूसरा काली लकड़ी का ऊपरी हिस्सा कौनसा है और निचला कौन सा? व्यापारी ने कहा यदि राजा इन प्रश्नों का उत्तर दे देंगे तो वह अपना जहाज इनाम के तौर पर उसी बन्दरगाह पर

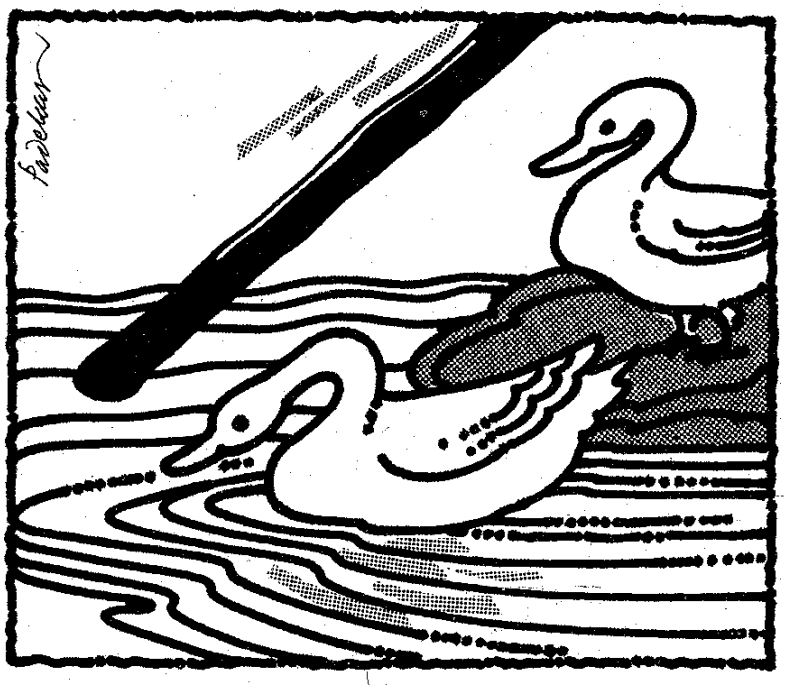

छोड़ देगा । यह सुनते ही राजा ने अपने दरबार में उपस्थित सभी विद्वानों से इन दोनों प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ने को कहे । सभी दरबारी, विद्वान व स्वयं राजा इन प्रश्नों का उत्तर खोजने में लग गये । व्यापारी ने राजा को केवल तीन दिन का समय दिया ।

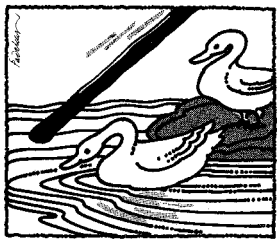

(विशेषज्ञो में एक आम प्रवृत्ति पाई जाती है कि अपनी दक्षता का दावा करते है उन क्षेत्रो में भी जिनमे उनको विशेष ज्ञान नहीं होता, आम लोगो से सीखने की ना तो क्षमता है उनमें और ना हीं प्रवृत्ति। बहुत से लोग लोगो के ज्ञान व सूझबूझ से सीखने के लिये तरह-तरह के आडम्बर रचते है। लेकिन जरुरत है सहज भाव की, नम्रता की और सामान्य जनो से सीखने की उत्सुकता की।)

स्रोत : इण्डोनेशिया की तोरोजा लोक कथाये
सम्पादक (अफवानी सोइबियात्तोरो और मनेल रत्नातुंगा)

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६१ पर देखिये।)

घंटी किसने बजाई?

एक बार एक लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटने के लिये जा रहा था। उसने देखा कि झाड़ियों के आसपास दो तीतर घबराहट की अवस्था में अपने पंख तेजी से फड़फड़ा रहे हैं। लकड़हारे ने पास जाकर देखा कि एक सांप उनके अण्डों पर फन फैला कर बैठा है। लकड़हारे ने सांप को इतना मारा कि सांप ने वही दम तोड़ दिया।

काफी समय बाद लकड़हारा फिर उसी जंगल से गुजरा। उस रोज वह रास्ता भूल गया और अंधेरा होने पर एक झोपड़ी के सामने रुका। उसने दरवाजा खटखटाया । बहुत सुन्दर लड़की ने उसका स्वागत

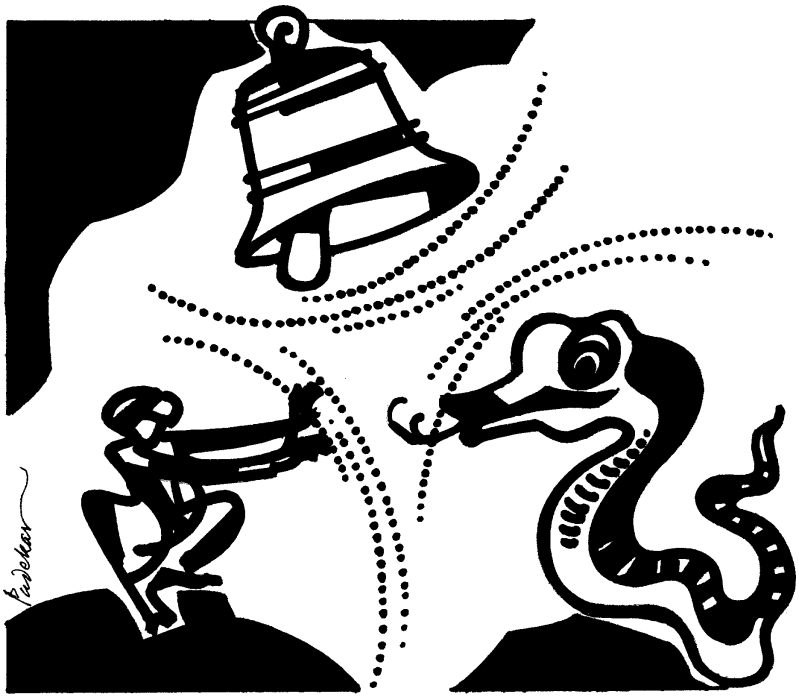

किया और स्वादिष्ट भोजन भी कराया। लकड़हारे ने लड़की से पूछा क्या तुम यहां अकेली रहती हो या किसी का इन्तजार कर रही हो? लकड़हारे के पूछते-पूछते लड़की ने अपना रूप बदल लिया और कहने लगी -मैं वही सांप हूं जिसको तुमने दस वर्ष पहले छड़ी से मार डाला था। इस पर लकड़हारे ने कहा, मैं तो तीतर के अण्डों को बचाना चाहता था। तुम्हें जान से मारने का मेरा कोई उद्देश्य नहीं था। मुझे माफ कर दो।

लड़की ने कुछ सोचकर कहा, मैं तुम्हें एक शर्त पर छोड़ सकती हूं। सामने पहाड़ की चोटी पर एक सुनसान पुराना मंदिर है और वहां पर एक बड़ी घंटी टंगी है । यदि तुम यहीं पर बैठे-बैठे वह घंटी बजा दोगे तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगी। इस पर लकड़हारा रोकर कहने लगा कि यह तो असंभव है। इस पर लड़की ने कहा ठीक है अब मरने के लिये तैयार हो जाओ और उसने अपना रुप भयानक सांप में बदल लिया । जैसे ही वह लकड़हारे को मारने के लिये बढ़ी तभी मंदिर की घंटी बज उठी और वायदे के अनुसार लड़की ने लकड़हारे को छोड़ दिया। मगर घंटी किसने बजाई?

(यह पहेली कोरिया की लोककथाओं में से चुनी गयी है। इस पहेली को सुलझाने में पाठक अपना योगदान दे।)

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६२ पर देखिये।)

आंवला किसने खाया?

बहुत समय पहले तमिलनाडु के उत्तर भाग में अथियामान नाम का एक राजा राज्य करता था। उसकी राजधानी का नाम था थाकादुर। अथियामान के मंत्री मंडल में अलियार नाम की पहली महिला मंत्री थी। अलियार को उसकी विलक्षण बुद्धि और सबसे प्रतिभाशाली होने के कारण राजा ने अपने मंत्री मंडल में शामिल किया था ।

एक दिन एक सिपाही राजा के दरबार में हाजिर हुआ । वह अपने साथ एक अनोखा उपहार राजा के लिये लाया । सिपाही अपने साथ बड़े आकार के आंवले का फल लाया था । यह आंवला विशेष पेड़ से उतारा

गया था जो कि १२ वर्ष में केवल एक ही बार फल देता था। आंवले की एक और विशेषता थी कि जो व्यक्ति यह आंवला खायेगा वह पूर्णतः स्वस्थ दीर्घायु पायेगा। राजा ने यह उपहार बहुत खुशी से ग्रहण कर लिया ।

राजा ने उपहार तो ले लिया मगर असंमजस में पड़ गया कि यह फल वह स्वयं खाये या किसी ओर को खाने को दे । आखिर राजा ने क्या किया?

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६२ पर देखिये।)

ढाई किलो दाने क्यों?

राजस्थान के बहुत से गांवों में ऐसी जमीन का टुकड़ा होता है जो सभी गांव-वासियों की साझी सम्पत्ति होती है । इस प्रकार की जमीन को ओरन कहते हैं। ओरन को ईश्वर या भगवान की जमीन मानते हैं इसलिये धार्मिक पर्वों पर ओरन में घास, पेड़-पौधे लगाये जाते हैं। चूंकि ओरन ईश्वरीय प्रसाद है इसलिये इस जमीन पर उगे पेड़-पौधों और घास को काटना भी एक दण्डनीय अपराध माना जाता है ।

एक दिन गांव में पंचायत बुलाई गयी जिसमें यह तय किया गया कि यदि कोई व्यक्ति ओरन (सांझी) जमीन पर पेड़ काटते हुये पकड़ा

जायेगा तो उसे क्या सजा होनी चाहिए? पंचों के बीच बहुत देर तक लम्बी बहस चली और अंत में यह तय हुआ कि ओरन पर पेड़ काटने वाले दोषी को सजा के रुप में नंगे पैर खड़े होकर भरी दोपहर में पक्षियों को ढाई किलोग्राम दाने खिलायेगा।

पेड़ काटने वाले को जलती रेत पर खड़ा रखने की सजा तो समझ आई परन्तु ढाई किलो दाने ही पक्षियों को खिलाने का क्या अर्थ है?

(क्या हमारे पाठक इस गुत्थी को सुलझा पायेंगे? यदि हां, तो अपने उत्तर हमें लिख भेजें। चुने हुए पत्रों को हम साभार प्रकाशित करेंगे।)

जाल क्यों टूटा?

कनाडा के पश्चिमी भाग में चीयाकमस नदी बहती है जिसके किनारे स्कूयसिश जाति के आदिवासी लोग रहते थे। नदी से मछली पकड़ कर उनका काम चल जाता था। कुछ ऐसा था कि बाढ़ आ जाने की स्थिति में भी नदी में मछलियों की कोई कमी न रहती थी। चिन्ता सिर्फ सर्दियों की रहती थी क्योंकि तापमान कम होने के फलस्वरुप नदी जम जाती थी।

इस समस्या से निपटने के लिए लोग गर्मियों में ही पूरी सर्दियों की मछली की आवश्यकता को जमा कर लेते थे। जैसे सर्दियां खत्म होती

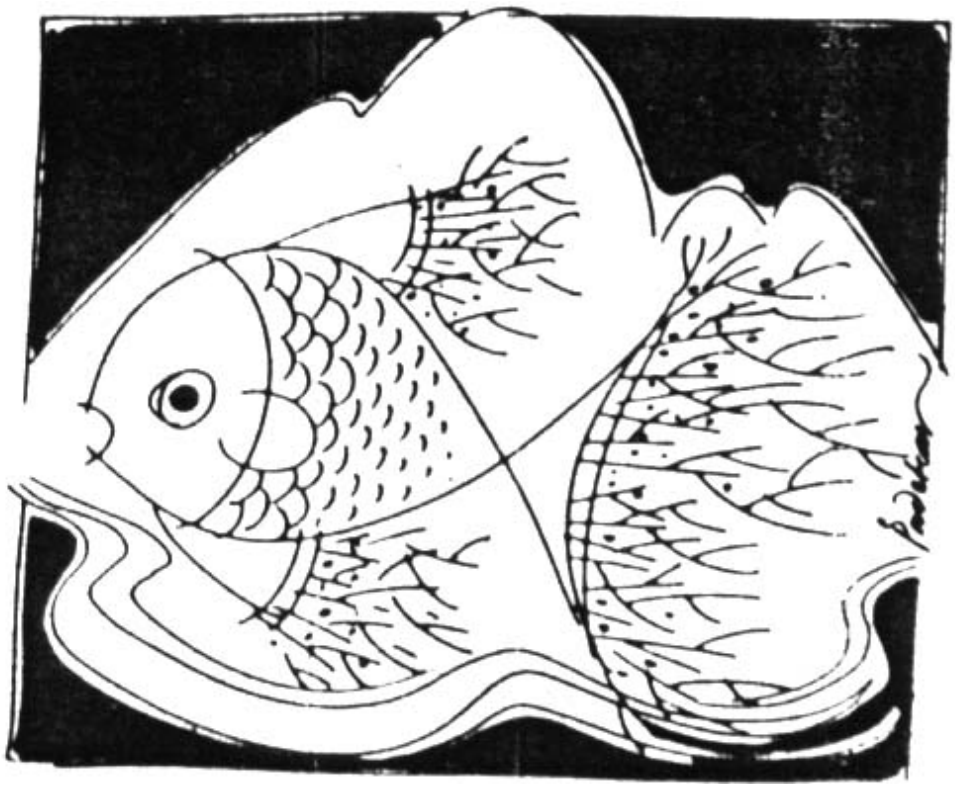

थीं, सामान्य जीवन लौट आता था और नदी में फिर से मछलियां भर जाती थीं।

लेकिन एक बार गर्मियों के मौसम में एक अजीब बात हुई। सीडार की लकड़ी से बने मजबूत जाल को पानी में डालने से एक व्यक्ति को ढेर सारी मछलियां पकड़ में आयी। मछलियों को टोकरी में भर वह व्यक्ति घर की ओर चला । लेकिन चलने से पहले उसने देखा कि किनारे पर मछलियों में कोई कमी न आई थी। फिर क्या था, उसने एक बार फिर नदी में जाल बिछा दिया।

काफी देर बाद जब उसने जाल नदी से निकाला तो वह दंग रह गया। एक तो जाल नष्ट हो चुका था, दूसरे उसमें कूड़ा व पेड़ - पौधे भरे पड़े थे। जब उसने मुड़कर टोकरी की ओर देखा तो हैरत में पड़ गया - टोकरी में मछलियों की जगह कूड़ा व पेड़-पौधे भरे थे। वह व्यक्ति असमंजस में पड़ गया कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि जाल भी टूट गया और मछलियां भी चली गई।

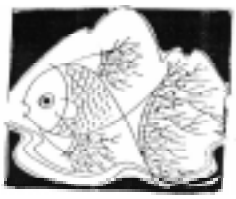

(पाठकों से अनुरोध है कि उस व्यक्ति की गुत्थी सुलझायें? इस घटना से हमारे समाज व उस व्यक्ति को क्या संदेश मिलता है?)

ऐसी क्या कसौटी थी?

एक रानी थी। नाम था सरस्वती देवी । वह अपने नाम के अनुरुप सुन्दरता व बुद्धिमता के लिये तो प्रसिद्ध थी ही, साथ ही प्रकृति के प्रति उसके आदर और प्रेम के किस्से भी मशहूर थे। राज्य की सीमा पर रानी की अपनी जमीन थी, जो कि बंजर थी। वह उसका कोई अच्छा उपयोग करना चाहती थी।

एक दिन रानी ने अपने राज्य में घोषणा करायी कि जो भी व्यक्ति या माली उस जमीन को हरा-भरा बनाने में सबसे अच्छी सूझबूझ लगायेगा उस माली को इनाम दिया जायेगा। घोषणा पत्र बाँट दिये और उन्हें

जैसे हो, वैसे ही भले

एक वर्ष का समय दिया बंजर भूमि को खुशहाल बनाने के लिए।

रानी ठीक एक वर्ष के बाद राज्य की सीमा पर स्थित उस बंजर जमीन के पास पहुंची तो हैरान हो गयी । दूर-दूर तक बंजर जमीन का अता पता नहीं था और उस जगह पर सुन्दर फूल, पेड़ व पक्षी यानी प्रकृति के सभी रंग मौजूद थे।

जहां एक प्रतियोगी ने गुलाबों के पौधों से अपना हिस्सा सजाया, तो वहां दूसरे किसी ने चमेली की खुशबू बिखेर दी और तीसरे ने तो गेंदे के फूलों को लगाकर वसंत को ही बुला लिया । लेकिन रानी ने उस प्रतियोगी को इनाम के लिये चुना जिसने अपनी जमीन के टुकड़े पर जंगली पेड़-पौधे लगाये थे। रानी का फैसला जानकर सभी दंग रह गये और सोचने लगे आखिर रानी ने पुरस्कार देने के लिये ऐसी किस कसौटी पर उस व्यक्ति को खरा पाया?

(क्या आप बता सकते हैं कि रानी ने ऐसे जमीन के टुकड़े के माली को ही पुरस्कृत क्यों किया? अपने उत्तर- विचार शीघ्र भिजवायें)

यह कैसा सौदा?

प्रीतम एक छोटा किसान था और उसके पास मात्र एक बैल था। बड़ी मुश्किल से कहीं दो वक्त का गुजारा कर पाता था। जिस वर्ष उसके गांव में सूखा पड़ा, उसकी कमजोर आर्थिक स्थिति चरमरा गई। साहूकार अपना ब्याज लेने की गुहार करने लगे। प्रीतम ने जैसे - तैसे स्थिति को संभाले रखा परन्तु सूखा लगातार तीन वर्ष चला और प्रीतम की सभी तरकीबें दम तोड़ने लगीं । बैल ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा बचा था। गांव के हाट पर बैल का सौदा करने निकल पड़ा। प्रीतम बैल को एक पेड़ से बांध कर खरीददार के इन्तजार में बैठ गया। एक खरीददार ने बैल को देखकर १०,००० रुपये की पेशकश

की । क्या तुम धूम्रपान करते हो? प्रीतम ने खरीददार से पूछा। खरीददार के नकारने पर प्रीतम ने उसे बैल न बेचने का फैसला किया । आसपास खड़े लोगों ने सोचा ज्यादा कीमत पर बेचने का अच्छा बहाना ढूंढा है प्रीतम ने ।

लेकिन सभी तब बड़े हैरान हुए जब प्रीतम ने बैल का सौदा अगले खरीददार से किया। हालांकि उक्त खरीददार ने केवल ५,००० रुपये की ही पेशकश की थी परन्तु उसके धूम्रपान करने के कारण प्रीतम ने बैल उसे बेच दिया ।

क्या आप बताना चाहेंगे कि धूम्रपान करने वाले व कम कीमत देने वाले को ही प्रीतम ने अपना बैल क्यों बेचा? हम धूम्रपान का कतई समर्थन नहीं करते, पर प्रीतम का संकेत काफी सारगर्भित है। सोचिये जरा!

(इसका उत्तर पुस्तक के अंत में पृष्ठ ६२ पर देखिये।)

उलझनों का समाधानः जरा सोचिये, थोड़ा मनन कीजिये

१५. जैसे हो, वैसे ही भले - टूटे घड़े की कहानी

क्या हम एक दूसरे की कमज़ोरियो को सहज बन आत्मसात करेगें, उनको अपनी व समय की ताकत बनायेगें? जीवन कितना मधुर हो जायें, यदि हमारी कमियां ही सामुदायिक ताकत का आधार बन जाये!

१६. गेहूँ के दाने में छिपा विश्व!

चतुर चद्रांग ने गेहूँ के दाने के विषय में क्या कहा ? पिछले अंक को आवरण कथा में यही प्रश्न हमने आपसे पूछा था। जरथुष्ट्र ने विस्तास्पा के प्रश्नों के उत्तर के रुप में एक गेहूँ का दाना क्यों सौंपा? चन्द्रांग ने जो कुछ कहा, वह इस प्रकार है.....

"महाराज विस्तास्पा, जरथुष्ट्र सचमुच बहुत महान संत है। यह नन्हा सा अन्न का दाना हमको प्रकृति का सम्पूर्ण सारांश और नियम समझा सकता है।

इसको इस कीमती सोने की डिबिया में रखने के बजाय यदि आप इसे धरती मां की गोद में रखते, जहां से यह आया है, तो यह हवा, पानी और सूर्य के प्रभाव से अपनी एक नई दुनिया रचता इसी तरह यदि आप भी इन महलों से निकल कर प्रकृति के नजदीक रहेंगे तो अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करेंगें, समझ विकसित करेंगे।"

"एक दिन यह गेहूँ का दाना-दाना नहीं रहेगा जिस दिन इसमें अंकुर फूटेगा उसी दिन यह मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेगा"

राजा विस्तास्पा ने यह सब सुनकर कहा, "आपने जो कुछ कहा वह सत्य है। पर वस्तुतः यह गेहूँ का पौधा भी मृत्यु को ही प्राप्त होगा और जिस धरती से यह फूटा था उसी में मिल जाएगा।"

"नहीं" चन्द्राग ने कहा। "इसकी मृत्यु में भी रचना है। मिट्टी में मिलने से पहले यह अपने जैसे सैंकड़ो दानों को रचेगा। इसी तरह यदि आप भी अपने वर्तमान स्वरुप को छोड़कर आध्यात्मक और ज्ञान की दुनिया में प्रविष्ट होंगे तो अपने व्यक्तित्व को निखार पाएंगे। वैसे ही जैसे जीवन, जीवन को रचता है, सत्य, सत्य को रचता है, और एक गेहूं के दाने ने रचे असंख्य दाने।"

गेहूं का दाना यह भी सिखाता है कि प्रकृति की हर एक वस्तु उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर गतिमान है। ज़िन्दगी हर दिन एक नया सबक सिखाती है, क्योंकि जीवन एक संघर्ष है। कभी खुले आकाश के नीचे खड़े होंगे तो पाएंगे कि जल, जमीन, हवा, आकाश, तारे, बादल-बरसात सभी कुछ एक सीख दे रहे हैं - जीवन जीने की सीख। प्यार से रहने की सीख।

क्योंकि हम सभी को रचने वाला रचनाकार एक ही है।

एडमोन्ड बोरडेक्स ज़ेकली की पुस्तक "द एसेंस टीचिंग्स ऑफ जरथुष्ट्र" पर आधारित।

१७. तोता आखिर क्यों उड़ा?

आखिर यह कैसा समाज है जो हमे अकाल के समय पक्षियों के अधिकार का बोध कराता है। यह कैसी संस्कृति है

जिसमें प्रकृति के प्रति ऐसी संवेदनशीलता को पहेली के रुप निहित किया गया है। कवि ने प्रश्न तो पूछा है, पर हर युग में, हर स्थान पर, हर पीढ़ी को अपनी स्थिति के अनुसार इसका उत्तर ढूंढना पडेगा।

१८. एक बेल को भी है, जीने का अधिकार

एक बेल का अपनी तरह जीने का अधिकार आज जब समाज में असहिष्णुता बढ़ रही है, इंसान एक दूसरे के ऊपर अपनी सोच को थोपने का प्रयास कर रहा है, ऐसे में, प्रकृति के विभिन्न हिस्सो को अपनी तरह से जीने का अधिकार देना कोरी कल्पना लगती है? लेकिन कल्पनायें ही भविष्य का निर्माण करती है, कैसी कल्पना, कैसा भविष्य, सोचिये।

२१. क्या गाय को न्याय मिला?

राजा ने अपने लड़के को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि वह रास्ते पर लेट जाये! उसके बाद अपने सेवकों को कहा उसके रथ को बेटे के ऊपर चला दिया जाये। बेटे की मृत्यु हो गई, न्याय का एक अद्भुत उदाहरण कायम हो गया, निर्मम तो लग सकता है, यह एक जानवर के दर्द का अहसास कराने का अद्भुत तरीका है।

२३. नर या मादा?

यदि विशेषज्ञ इन प्रश्नो का उत्तर नहीं दे पाया तो, उसका गला काट दिया जायेगा। समय अवधि समाप्त होने को थी और विशेषज्ञ अभी तक उत्तर नहीं ढूंढ पाये थे। निराश होकर उसने आत्महत्या करने का निश्चय किया। वो डूबने के लिये नदी के पास गया और वहां उसने कुछ आम लोगो को आपस में बातचीत करते हुए सुना। वह कह रहे थे, राजा कितना बेवकूफ है, उसको यह भी नहीं मालूम कि उसे दोनो बत्तखों को पानी के पास छोड देना चाहिये। जो पहले पानी में कूंदेगा वही नर है और यह कह कर, वह जोर से हँस पड़े। दूसरी समस्या भी कोई खास नहीं है। यदि काली लकड़ी के डण्डे को पानी में डालोगे, तो भारी हिस्सा पहले पानी में डूबेगा और जो हिस्सा हलका है, ऊपर रहेगा।

२४. घंटी किसने बजाई?

अगले दिन जब लकडहारा पहाड़ पर चढ़ा तो उसे दो पक्षी मंदिर में मरे हुए मिले। यह दोनो पक्षी वही थे जिनके अण्डों को उसने सांप से बचाया था। उन्होंने अपने सिर को घंटी से मार-मार कर अपने रक्षक को बचाया था।

२५. आंवला किसने खाया?

पाठको, राजा ने सोचा कि अलियार, जो कि एक कवियत्री भी थी, चितंक व विलक्षण प्रतिभावान थी, इस फल की अधिकारी थी। यह भी एक सोचने का तरीका है, जीने का तरीका है। जिससे आज भी हम चाहें तो, कुछ सीख सकतें है।

२९. यह कैसा सोदा?

किसान ने सभंवतः सोचा होगा कि जो धूम्रपान नहीं करेंगा, वो बैल को आराम का मौका ही नहीं देगा। यह सही है कि धूम्रपान अच्छी आदत नहीं है, लेकिन बैल के आराम की भी तो चिंता करनी जरुरी है। कोई और तरीका आपके मन में बैल को आराम देने के बारे में हो तो लिखयेगा।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान

नवसर्जको व पारम्परिक ज्ञान सम्पन्न लोगों के
समर्थन मे एक राष्ट्रीय प्रयास

ऐसे अवसर कम आते है जब एक अनौपचारिक पहल राष्ट्र की सोच में परिवर्तित हो जाती है। हनी बी नेटवर्क ने १५ वर्ष पूर्व एक बीज बोया था, लोगो से लोगो को सीखने के बारे में, एक सृजनशील समाज बनाने के बारे में और पारम्पारिक ज्ञान सम्पन्न व नवाचार को/सजृनशील अन्वेषणकर्ताओं को उनकी खोज व ज्ञान के लिये आगे बढ़ने के अवसर देने के बारे में! सन १९९९ मार्च में भारतीय सरकार के विज्ञान व तकनीक विभाग के सहयोग से, राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान की स्थापना अहमदाबाद में डॉ. रा. ए. मशेलकर अध्यक्ष, विज्ञान व औद्योगिक अनुसंधान परिषद के नेतृत्व में हुई! राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान ने पिछले चार वर्षो में लगभग ३६००० स्थानीय सूझबूझ/अन्वेषण इत्यादि व पारम्पारिक ज्ञान की पद्धतियां खोज निकाली है। यह जानकारी ३६० जिलों से ज्यादा क्षेत्रों में फैली हुई है। राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान का उद्देश्य केवल नई खोजो व शोधो को जो लोगों ने बिना किसी बाहरी मदद से की हैं, उन्हें ढूंढना ही नहीं है परन्तु उनको उत्पाद व धंधो में परिवर्तित करना भी है। उनका प्रचार/प्रसार वाणिज्य़ अथवा गैर वाणिज्य़ माध्यम से हो, इसका प्रबंध करना भी है।

राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान के पांच विभाग है, (१) नई स्थानीय सूझबूझ व पारम्परिक ज्ञान को ढूंढना व उनका विस्तार से अध्ययन करना (२) औपचारिक विज्ञान व तकनीकी ज्ञान से इन जानकारियों का शोधन करना, (३) ज्ञान सम्पन्न लोगो के बौद्धिक सम्पदा के अधिकार की सुरक्षा करना, (४) इन जानकारियों पर आधारित धंधे लगाने के लिये बाज़ार व उद्यम से जोड़ना, जोखिम राशि की व्यवस्था करना और (५) सूचना व सप्रेषण तकनीकी के प्रयास से ज्ञान कोश बनाना, महत्वपूर्ण जानकारियों का प्रसार करना इत्यादि, राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान लोगों की सूझबूझ को उनकी पूर्व सहमति के नियमो के आधीन ही इस्तेमाल करने का प्रावधान हमने बनाया है। हमने करीब ६० अन्वेषको के लिये पेटंट आवेदन किये है देश में और छः लोगो के लिये अमरीका मे आवेदन किया, एक किसान-कारीगर को पिछले वर्ष (२००३) अमरीका मे पेटंट मिल भी गया है। देश मे अभी भी किसी को पेटंट मिलना बाकी है। ज्ञान नामक संस्थाओ के जरिये तकनीकी सूझबूझ को धंधे मे परिवर्तित करने की कोशिश जारी है। लगभग १४ नवाचारो को उद्यमियो को राशि विशेष के बदले में बाज़ार मे बेचने का अधिकार दिया गया है।

राष्ट्रीय नवीनीकरण प्रतिष्ठान भारत को टिकाऊ तकनीको के क्षेत्र में विश्व में एक अग्रणी देश बनाने का इच्छुक है। आप भी इस प्रयास में सहयोगी बन सकते हैं यदि आप हनी बी दर्शन में विश्वास करते है, मधुमक्खी की भांति लोगो को एक दूसरे से जोड़कर सृजनशीलता की एक अनोखी बिरादरी बना सकते हैं।

web : www.nifindia.org

सृष्टि

सृष्टि की स्थापना हनी बी नेटवर्क, यानि सूझबूझ सम्पन्न लोगों के गठजोड़ को समर्थन देने हेतु की गई थी। प्रकृति के प्रति हमारा समर्पण, नैतिकता के नये आयामों की समझ और स्थानीय रचनात्मकता और सर्जनशीलता को प्रोत्साहन देना हमारी जिम्मेदारियाँ है। देश में ज्ञान सम्पन्न पर आर्थिक रुप से गरीब लोगों के समर्थन में नीति बने, यह प्रयास हमें निरंतर करना है, देश को टिकाऊ तकनीक के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनाना हमारा कर्तव्य है। सृष्टि ने तकनीकी सूझबूझ ही नहीं, सामुदायिक मर्यादाओं में स्थानीय नवाचार और प्राथमिक शिक्षा में बिना किसी बाहरी मदद के नये प्रयासों का ज्ञान कोष भी बनाया है।

सृष्टि का मुख्य उद्देश्य है :

- ☞ स्थानीय सूझबूझ, नैतिकता, मूल्य, मर्यादाओं, उत्कृष्टता और सामाजिक न्याय के आपसी सम्बन्ध को सुदृढ़ करना।
- ☞ समाज की प्रकृति के प्रति निष्ठा को आगे बढ़ाना और स्थानीय मर्यादाओं से सीखने का व्यवस्थित प्रयास करना।
- ☞ औपचारिक व अनौपचारिक विज्ञान के बीच सेतु बनाना,
- ☞ स्थानीय सूझबूझ में गुणवत्ता बढ़ा कर व नये उत्पाद बनाकर स्थानीय आविष्कारकों, पारम्पारिक ज्ञान सम्पन्न लोगों व कारीगरों को आर्थिक लाभ उपलब्ध कराना है।
- ☞ नवाचारकों के बौद्धिक सम्पदा के अधिकारो की सुरक्षा

  और

- ☞ समाज को मूक प्राणियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनना, स्थानीय सूझबूझ को विकास का आधार बनाना और संवेदनशीलता, संपेक्षण, सामाजिक लाभ और सामुदायिक सम्पदा की भावना को फैलाना

web : www.sristi.org, www.indiainnovates.com

ज्ञान

भारतीय प्रबंध संस्थान (Indian institute of Management, Ahmedabad) में एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी १९९७ में आयोजित की गई जिसका उद्देश्य था, स्थानीय सूझबूझ व रचनात्मकता के महत्व को पहचानना। उसके परिणामस्वरुप ज्ञान (Grassroots Inovations Augmentation Network) यानि स्थानीय नवाचार प्रोत्साहन संकुल की स्थापना गुजरात सरकार की मदद से स्थापित की गई। ज्ञान के मुख्य उद्देश्य हैं :-

१ नवाचार, निवेश व उद्यम को जोड़ना और सूझबूझ पर आधारित व्यवसायों की स्थापना करना,

२ स्थानीय अविष्कार व नवसर्जन पर आधारित तकनीकों का वाणिज्य माध्यमो से प्रसार करना,

३ सूझबूझ सम्पन्न लोगो के बौद्धिक अधिकारों की सुरक्षा,

४ लोगों को उनकी सूझबूझ के बाजार में आने से होने वाले लाभ का न्यायोचित हिस्सा दिलवाना, साथ ही इस लाभ को उनके समुदाय, प्रकृति व औपचारिक विज्ञान तकनीक, डिजाइन इत्यादि संस्थाओं के साथ भी बांटना

web : www.gian.org